अध्याय दो

सबक़ एक :

अमीर लोग पैसे के लिए काम नहीं करते

"डैडी, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि अमीर कैसे बना जाए?"

यह सुनते ही मेरे डैडी ने अपना शाम का अख़बार नीचे रख दिया। "बेटे, तुम अमीर क्यों बनना चाहते हो?"

"क्योंकि आज जिमी की मम्मी अपनी नई कैडिलक कार में आईं और वे लोग पिकनिक पर अपने समुद्र तट वाले घर पर जा रहे थे। जिमी अपने साथ अपने तीन दोस्तों को ले गया, परंतु माइक और मुझे नहीं ले गया। उसने हमसे यह कहा कि वह हमें इसलिए नहीं ले जाएगा क्योंकि हम लोग 'ग़रीब बच्चे' थे।"

"उसने ऐसा कहा?" डैडी ने अविश्वास से पूछा।

"हाँ, बिलकुल ऐसा।" मैंने दर्द भरी आवाज़ में कहा।

डैडी ने अपना सिर हिलाया, नाक तक चश्मे को चढ़ाया और फिर अख़बार पढ़ने लगे। मैं उनके जवाब का इंतज़ार करता रहा।

यह 1956 की बात है। तब मैं नौ साल का था। क़िस्मत की बात थी कि मैं उसी पब्लिक स्कूल में जाता था जिसमें अमीर लोगों के बच्चे पढ़ते थे। हम शुगर प्लांटेशन के क़स्बे में रहते थे। प्लांटेशन के मैनेजर और क़स्बे के बाक़ी अमीर लोग जैसे डॉक्टर, बिज़नेसमैन और बैंकर अपने बच्चों को पहली क्लास से छठी क्लास तक इसी स्कूल में भेजते थे। छठी क्लास के बाद बच्चों को प्रायवेट स्कूलों में भेजा जाता था। अगर मेरा परिवार सड़क के दूसरे छोर पर रह रहा होता तो मुझे अलग तरह के स्कूल में भेजा जाता जहाँ मेरे जैसे परिवारों के बच्चे पढ़ते थे। छठी क्लास के बाद इन बच्चों की तरह मैंने भी पब्लिक इंटरमीडिएट और हाई स्कूल किया होता क्योंकि उनकी ही तरह मेरे लिए भी प्रायवेट स्कूल में जाना संभव नहीं था।

Scanned by CamScanner

VISIT…

मेरे डैडी ने आख़िर अख़बार को रख दिया। मुझे पता था कि वे क्या सोच रहे थे।

उन्होंने धीमे से शुरुआत की, "अगर तुम अमीर बनना चाहते हो, तो तुम्हें पैसे बनाना सीखना चाहिए।"

मैंने पूछा, "मैं पैसे बनाना किस तरह सीख सकता हूँ?"

"अपने दिमाग़ के इस्तेमाल से," उन्होंने मुस्कराते हुए कहा। जिसका असली मतलब यह था, 'बस, मैं तुम्हें इतना ही बता सकता हूँ' या 'मैं इसका जवाब नहीं जानता, इसलिए मुझे तंग मत करो।'

एक साझेदारी हुई

अगली सुबह मैंने अपने सबसे अच्छे दोस्त माइक को अपने डैडी की बातें बताईं। जहाँ तक मुझे याद है, उस स्कूल में मैं और माइक ही दो ग़रीब बच्चे थे। माइक भी मेरी ही तरह था क्योंकि वह भी क़िस्मत की वजह से ही उस स्कूल में था। ऐसा लगता था जैसे किसी ने क़स्बे में स्कूलों की सरहदें तय कर दी थीं और इसी कारण हम लोग अमीर बच्चों के स्कूल में पढ़ रहे थे। सच कहा जाए तो हम लोग ग़रीब नहीं थे, परंतु हमें ऐसा लगता था क्योंकि बाक़ी सभी बच्चों के पास नए बेसबॉल ग्लव्ज़, नई साइकलें और हर चीज़ नई होती थी।

मम्मी और डैडी ने हमें ज़रूरत की सभी चीज़ें दी थीं, जैसे खाना, घर, कपड़े। लेकिन इससे ज़्यादा कुछ नहीं। मेरे डैडी कहा करते थे, 'अगर तुम्हें कोई चीज़ चाहिए, तो उसके लिए काम करो।' हमें बहुत सी चीज़ें चाहिए थीं, लेकिन नौ साल के बच्चों के करने के लिए ज़्यादा काम मौजूद नहीं थे।

माइक ने पूछा, "तो पैसा कमाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?"

"मैं नहीं जानता," मैंने कहा। "लेकिन क्या तुम इस काम में मेरे पार्टनर बनना चाहते हो?"

वह राज़ी हो गया और उस शनिवार की सुबह माइक मेरा पहला बिज़नेस पार्टनर बन गया। हम दोनों पूरी सुबह यही सोचते रहे कि पैसा किस तरह कमाया जाए। कभी-कभार हम उन "बेफ़िक्र बच्चों" के बारे में बातें करते रहे जो जिमी के समुद्रतट वाले घर पर मज़े कर रहे होंगे। इससे थोड़ी चोट पहुँचती थी, परंतु यह चोट अच्छी थी क्योंकि इसने हमें यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि पैसा कैसे कमाया जाए। आख़िरकार उस दोपहर को हमारे दिमाग़ में बिजली कौंध गई। यह एक ऐसा विचार था जो माइक ने किसी विज्ञान की किताब में पढ़ा था। रोमांचित होकर, हमने अपने हाथ मिलाए और पार्टनरशिप के पास अब एक बिज़नेस था।

Scanned by CamScanner

अगले कुछ हफ़्तों तक मैं और माइक आस-पास के इलाक़े में दौड़-भाग करते रहे। हम दरवाज़ों पर दस्तक देते थे और पड़ोसियों से कहते थे कि वे अपने इस्तेमाल किए हुए टूथपेस्ट ट्यूब हमारे लिए रख लें। हैरत से हमें देखते हुए ज़्यादातर लोगों ने मुस्कराकर हमारी बात मान ली। कुछ ने हमसे पूछा कि हमें टूथपेस्ट ट्यूब क्यों चाहिए? इसके जवाब में हमने कहा, "हम आपको यह नहीं बता सकते। यह एक बिज़नेस सीक्रेट है।"

सप्ताह गुज़रते गए और मेरी माँ बहुत दुखी हो गईं। अपने कच्चे माल को इकट्ठा करने के लिए हमने जो जगह चुनी थी वह उनकी वॉशिंग मशीन के ठीक पास थी। एक भूरे कार्डबोर्ड के डिब्बे में जिसमें कभी केचप की बोतलें रखी रहती थीं, हमारे इस्तेमाल किए हुए टूथपेस्ट के ट्यूब्स की संख्या बढ़ने लगी।

आख़िर एक दिन माँ के सब्र का बाँध टूट गया। पड़ोसियों के मुड़े-तुड़े और इस्तेमाल किए हुए टूथपेस्ट ट्यूब्स को देखते-देखते वे ऊब गई थीं। उन्होंने पूछा, "तुम लोग कर क्या रहे हो? और मैं यह नहीं सुनना चाहती कि यह एक बिज़नेस सीक्रेट है। इस कचरे को साफ़ कर दो या मैं इसे उठाकर बाहर फेंक देती हूँ।"

माइक और मैंने उनके हाथ-पैर जोड़े और उन्हें यह बताया कि जल्दी ही हमारा कच्चा माल पर्याप्त जमा हो जाएगा और फिर हम उत्पादन शुरू कर देंगे। हमने उन्हें बताया कि हम कुछ पड़ोसियों का इंतज़ार कर रहे थे ताकि वे अपने टूथपेस्ट के ट्यूब्स ख़त्म कर लें। माँ ने हमें एक हफ़्ते की मोहलत और दे दी।

उत्पादन शुरू होने की तारीख़ क़रीब आ गई थी। दबाव बढ़ चुका था। हमारे वेअरहाउस के मालिक यानी मेरी माँ ने हमारी पहली पार्टनरशिप कंपनी को जगह ख़ाली करने का नोटिस थमा दिया था। अब माइक का काम यह था कि वह पड़ोसियों को अपने टूथपेस्ट जल्दी ख़त्म करने के लिए कहे और साथ में यह भी जोड़ दे, दाँत के डॉक्टरों का कहना है कि दिन में कई बार ब्रश करना चाहिए। मैं उत्पादन की प्रक्रिया को ठीक-ठाक करने में जुट गया।

एक दिन मेरे डैडी अपने एक दोस्त के साथ कार में बैठकर पोर्च में आए और उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने वहाँ नौ साल के दो बच्चों को उत्पादन की प्रक्रिया में पूरी गति से जुटे देखा। हर जगह बारीक सफ़ेद पाउडर बिखरा हुआ था। एक लंबी मेज़ पर स्कूल से लाए गए दूध के छोटे कार्टन थे और हमारे परिवार की हिबाची ग्रिल लाल दहकते कोयलों के साथ अधिकतम गर्मी पर जल रही थी।

डैडी सावधानी से चलकर हमारे क़रीब आए। चूँकि हमारे उत्पादन की प्रक्रिया ने पोर्च पर क़ब्ज़ा कर लिया था इसलिए उन्हें कार बाहर ही खड़ी करनी पड़ी। जब वे और उनके दोस्त पास आए, तो उन्होंने कोयलों के ऊपर

Scanned by CamScanner

रखा एक स्टील का बर्तन देखा जिसमें टूथपेस्ट के ट्यूब पिघल रहे थे। उन दिनों टूथपेस्ट प्लास्टिक के ट्यूब्स में नहीं आते थे। ट्यूब सीसे के बने होते थे। एक बार पेंट जल जाने पर हम ट्यूब्स को स्टील के बर्तन में डाल देते थे ताकि वह पिघलकर द्रव रूप में आ सकें। इस पिघले हुए सीसे को हम छोटे छेद वाले दूध के कार्टनों में डाल रहे थे।

दूध के इन कार्टनों में प्लास्टर ऑफ़ पेरिस भरा था। हर तरफ़ फैला सफ़ेद पाउडर प्लास्टर ही था, जिसमें हमने पानी मिलाया था। जल्दबाज़ी में, मैंने उसके बैग को गिरा दिया था और पूरी ज़मीन ऐसी लग रही थी जैसे वहाँ अभी-अभी बर्फ़ का तूफ़ान आया हो। दूध के कार्टन बाहरी बक्से थे जिसके भीतर प्लास्टर ऑफ़ पेरिस के साँचे थे।

मेरे डैडी और उनके दोस्त हमें देखते रहे और हम पिघले हुए सीसे को प्लास्टर ऑफ़ पेरिस के क्यूब के ऊपर से छोटे से छेद में डालते रहे।

"सँभलकर," मेरे डैडी ने कहा।

मैंने बिना सिर उठाए हामी भर दी।

आख़िरकार जब सीसे को डालने का काम ख़त्म हो गया तो मैंने स्टील के बर्तन को नीचे रख दिया और फिर अपने डैडी की तरफ़ देखकर मुस्कराया।

उन्होंने हल्की मुस्कान के साथ पूछा, "तुम लोग क्या कर रहे हो?"

"हम वही कर रहे हैं, जो आपने बताया था। हम अमीर बनने जा रहे हैं," मैंने कहा।

"हाँ," माइक ने सिर को हिलाते हुए और मुस्कराते हुए कहा। "हम दोनों पार्टनर हैं।"

डैडी ने पूछा, "और इन प्लास्टर के साँचों में क्या है?"

"देखिए," मैंने कहा। "इसमें एक बहुत अच्छी चीज़ है।"

छोटे हथौड़े से मैंने सील को ठोका जिससे बाहरी खोल टूट गया। सावधानी से मैंने ऊपर के आधे प्लास्टर को हटाया और जस्ते का एक सिक्का बाहर गिर गया।

"हे, भगवान!" मेरे डैडी ने कहा। "तो तुम लोग जस्ते के सिक्के ढाल रहे थे।"

"बिलकुल सही," माइक ने कहा। "हम वही कर रहे थे जैसा आपने हमसे कहा था। हम पैसा बना रहे थे।"

मेरे डैडी के दोस्त ज़ोर से हँसने लगे। मेरे डैडी भी मुस्कराए और उन्होंने अपना सिर हिलाया। उनके सामने आग और टूथपेस्ट की ट्यूब्स के बक्से के

Scanned by CamScanner

साथ सफ़ेद धूल में लिपटे हुए दो बच्चे खड़े थे, जो इस कान से उस कान तक खुलकर मुस्करा रहे थे।

उन्होंने हमसे कहा कि हम सब कुछ छोड़कर उनके साथ चलें और घर के सामने वाली सीढ़ी पर बैठें। मुस्कराते हुए उन्होंने हमें "जालसाज़ी" शब्द का मतलब समझाया।

हमारे सपने धराशायी हो गए थे। "तो आपका मतलब है कि यह ग़ैरक़ानूनी है?" माइक ने काँपती आवाज़ में पूछा।

"छोड़ो भी," डैडी के दोस्त ने कहा। "हो सकता है कि बच्चे अपनी जन्मजात प्रतिभा को विकसित कर रहे हों।"

मेरे डैडी उन्हें घूरते रहे।

"हाँ, यह ग़ैरक़ानूनी है," डैडी ने नरमी से कहा। "परंतु तुम लोगों ने यह साबित कर दिया है कि तुममें बहुत ज़्यादा रचनात्मकता और मौलिक विचार हैं। इसी तरह आगे बढ़ते रहो। मुझे तुम पर गर्व है!"

निराश होकर, माइक और मैं तक़रीबन बीस मिनट तक चुपचाप अपना सिर पकड़कर बैठे रहे। इसके बाद हमने सारा अटाला साफ़ करना शुरू किया। पहले ही दिन हमारा बिज़नेस चौपट हो गया था। पाउडर साफ़ करते हुए मैंने माइक की ओर देखा और कहा, "मुझे लगता है जिमी और उसके दोस्त ठीक कहते हैं। हम सचमुच ग़रीब हैं।"

जब मैंने यह कहा तब डैडी बस जाने ही वाले थे। "बच्चो," उन्होंने कहा, "तुम ग़रीब तभी कहलाओगे जब तुम लोग हार मान लोगे। सबसे महत्वपूर्ण चीज़ यह है कि तुमने कुछ किया। ज़्यादातर लोग केवल अमीर बनने के बारे में बातें करते रहते हैं और उसके सपने देखते रहते हैं। तुमने कुछ किया है। मुझे तुम दोनों पर गर्व है। मैं एक बार फिर से यही कहूँगा। आगे बढ़े चलो। हार मत मानो।"

माइक और मैं ख़ामोश खड़े रहे। ये शब्द सुनने में अच्छे थे, परंतु हमें यह पता नहीं था कि हमें क्या करना चाहिए।

"तो ऐसा क्यों है, डैडी, कि आप अमीर नहीं हैं?" मैंने पूछा।

"क्योंकि मैंने एक स्कूल टीचर बनने का फ़ैसला किया था। स्कूल के टीचर अमीर बनने के बारे में नहीं सोचते। हम सिर्फ़ पढ़ाना पसंद करते हैं। काश कि मैं तुम लोगों की मदद कर सकता, परंतु हक़ीक़त में मैं यह नहीं जानता कि दौलत कैसे कमाई जाती है।"

माइक और मैं पलटे और अपने सफ़ाई अभियान में जुट गए।

Scanned by CamScanner

डैडी ने कहा, "अगर तुम लोग यह सीखना ही चाहते हो कि अमीर कैसे बना जाता है, तो मुझसे मत पूछो। माइक, तुम अपने डैडी से यह सवाल पूछो।"

"मेरे डैडी?" माइक ने हैरानी से कहा।

"हाँ, तुम्हारे डैडी," मेरे डैडी ने मुस्कराकर दोहराया। "तुम्हारे डैडी और मेरा बैंकर एक ही है और वह तुम्हारे डैडी की बहुत तारीफ़ करता है। उसने मुझे कई बार यह बताया है कि पैसा बनाने में तुम्हारे डैडी का कोई जवाब नहीं है।"

"मेरे डैडी?" माइक ने एक बार फिर हैरानी से पूछा। "फिर ऐसा क्यों है कि स्कूल के अमीर बच्चों की तरह हमारे पास शानदार कार और आलीशान बंगला नहीं है?"

"शानदार कार और आलीशान बंगले के होने का यह मतलब नहीं होता कि आप निश्चित रूप से अमीर हैं या आप पैसा बनाने की कला जानते हैं।" डैडी ने जवाब दिया। "जिमी के डैडी शुगर प्लांटेशन में काम करते हैं। उनमें और मुझमें ज़्यादा फ़र्क़ नहीं है। वे एक कंपनी के लिए काम करते हैं और मैं सरकार के लिए। कंपनी उन्हें कार ख़रीदकर दे देती है। इस समय शकर की कंपनी आर्थिक संकट में फँसी हुई है और जिमी के डैडी के पास जल्द ही कुछ नहीं बचेगा। तुम्हारे डैडी अलग हैं, माइक। ऐसा लगता है कि वे एक साम्राज्य बनाने जा रहे हैं और मेरा अंदाज़ है कि कुछ ही सालों में वे बहुत अमीर बन जाएँगे।"

यह सुनकर माइक और मैं एक बार फिर रोमांचित हो गए। नए उत्साह से हमने अपने डूबे हुए व्यवसाय के कचरे को साफ़ करना शुरू कर दिया। जब हम सफ़ाई कर रहे थे, तो हमने यह भी योजना बना ली कि कब और कैसे माइक के डैडी से बात की जाए। समस्या यह थी कि माइक के डैडी बहुत ज़्यादा काम करते थे और देर रात तक घर नहीं लौटते थे। माइक के डैडी के पास कई वेयरहाउस, कंस्ट्रक्शन कंपनी, स्टोर्स की शृँखला और तीन रेस्तराँ थे। रेस्तराँओं के कारण ही उन्हें घर लौटने में देर हो जाती थी।

सफ़ाई ख़त्म करने के बाद माइक बस पकड़कर अपने घर चला गया। वह अपने डैडी से बात करने वाला था, चाहे वे कितनी ही देर से घर लौटें और उनसे पूछने वाला था कि क्या वे हमें अमीर बनने की तरकीब सिखाने के लिए तैयार हैं। माइक ने मुझसे वादा किया कि जैसे ही वह अपने डैडी से बात कर लेगा, वह मुझे फ़ोन करेगा, चाहे कितनी ही देर क्यों न हो जाए।

फ़ोन रात को 8:30 बजे आया।

"ओके, अगले शनिवार," मैंने कहा। और फ़ोन रख दिया। माइक के डैडी माइक और मुझसे मिलने के लिए तैयार हो गए थे।

शनिवार की सुबह 7:30 बजे मैंने शहर के दूसरे हिस्से में जाने के लिए बस पकड़ी।

Scanned by CamScanner

और सबक़ शुरू हुए

"मैं तुम्हें एक घंटे के दस सेंट दूँगा।"

1956 की तनख़्वाह के हिसाब से भी दस सेंट प्रति घंटे का वेतन कम था।

माइकल और मैं सुबह 8 बजे उसके डैडी से मिले। वे पहले से ही व्यस्त थे और उनके पास एक घंटे से भी ज़्यादा का काम मौजूद था। जब मैं उनके साधारण, छोटे और साफ़ घर के सामने पहुँचा तो मैंने देखा कि उनका कंस्ट्रक्शन सुपरवाइज़र अपने पिकअप ट्रक में वहाँ से जा रहा था। माइक मुझे दरवाज़े पर ही मिल गया।

"डैडी अभी फ़ोन पर हैं, और उन्होंने कहा है कि हम लोग पीछे के पोर्च में उनका इंतज़ार करें।" माइक ने दरवाजा खोलते हुए कहा।

जब मैंने उस पुराने घर की दहलीज़ के अंदर क़दम रखा तो लकड़ी के पुराने फ़र्श की चरमराहट सुनाई दी। दरवाज़े के भीतर सस्ती सी चटाई थी। चटाई वहाँ इसलिए रखी गई थी ताकि फ़र्श पर पड़े अनगिनत क़दमों के निशानों को छुपाया जा सके। हालाँकि वह साफ़ थी, पर यह स्पष्ट दिखता था कि उसे बदल देना चाहिए।

जब मैं सँकरे लिविंग रूम में घुसा तो मेरा दम घुटने लगा था। वहाँ पुराने फ़र्नीचर की बू आ रही थी और निश्चित रूप से उस फ़र्नीचर को संग्रहालय में होना चाहिए था। सोफ़े पर दो महिलाएँ बैठी थीं, जिनकी उम्र मेरी माँ से थोड़ी ज़्यादा होगी। महिलाओं के सामने एक पुरुष मज़दूरों के कपड़ों में बैठा हुआ था। उसने ख़ाकी पैंट और ख़ाकी शर्ट पहन रखा था। हालाँकि कपड़े साफ़ और प्रेस किए थे, परंतु उनमें स्टार्च नहीं किया गया था। उस आदमी की उम्र मेरे डैडी से लगभग दस साल ज़्यादा होगी, शायद 45 साल। जब मैं और माइक उनके पास से गुज़रते हुए किचन की तरफ़ गए जहाँ से पोर्च का रास्ता था, तो वे मुस्कराए। मैं भी जवाब में शरमाकर मुस्करा दिया।

"ये लोग कौन हैं?" मैंने पूछा।

"अरे, ये लोग डैडी के लिए काम करते हैं। बूढ़ा व्यक्ति उनके वेयरहाउसों को सँभालता है और महिलाएँ रेस्तराँओं की मैनेजर हैं। और तुमने उस कंस्ट्रक्शन सुपरवाइज़र को तो देखा ही होगा जो यहाँ से 50 मील दूर एक सड़क परियोजना पर काम कर रहा है। उनका दूसरा सुपरवाइज़र, जो बहुत से घर बना रहा है, वह तुम्हारे आने के पहले ही जा चुका है।"

"क्या ऐसा हमेशा ही होता है?" मैंने पूछा।

"हमेशा तो नहीं, पर अक्सर ऐसा ही होता है," माइक ने कहा, और मेरे पास अपनी कुर्सी खींचते हुए वह मुस्कराया।

Scanned by CamScanner

"मैंने उनसे पूछा था कि क्या वे हमें पैसा बनाना सिखाएँगे," माइक ने मुझे बताया।

"अच्छा, और उन्होंने इसका क्या जवाब दिया?" मैंने सावधानीपूर्ण उत्सुकता से पूछा।

"पहले तो उनके चेहरे पर हँसी आई, पर फिर कुछ सोचकर उन्होंने कहा कि वे हमारे सामने एक ऑफ़र रखेंगे।"

"अच्छा," मैंने कहा और अपनी कुर्सी की पीठ दीवार से टिका ली। मैं वहाँ कुर्सी के पिछले दो पैरों के सहारे टिका बैठा रहा।

माइक ने भी ऐसा ही किया।

"क्या तुम्हें पता है कि वे कौन सा ऑफ़र देने वाले हैं?" मैंने पूछा।

"नहीं, पर हमें जल्दी ही इसका पता चल जाएगा।"

अचानक, माइक के डैडी उस पुराने दरवाज़े से घुसकर पोर्च में दाख़िल हुए। माइक और मैं अपने पैरों पर कूद गए, आदर के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि हम चौंक गए थे।

"तो बच्चो, तैयार?" माइक के डैडी ने एक कुर्सी हमारे पास खिसकाते हुए पूछा।

हमने अपने सिर हिलाए और अपनी कुर्सियों को दीवार के पास से खींचकर उनके सामने रख लिया।

वे एक विशाल शरीर के मालिक थे, लगभग 6 फ़ीट ऊँचे और 200 पाउंड वज़नी। मेरे डैडी इससे ऊँचे थे, लगभग इसी वज़न के और माइक के डैडी से पाँच साल बड़े। वे लगभग एक जैसे ही थे, हालाँकि दोनों एक ही प्रजाति के नहीं थे। हो सकता है कि उनकी ऊर्जा एक सी हो।

"माइक का कहना है कि तुम पैसा कमाना सीखना चाहते हो? क्या यह सही है, रॉबर्ट?"

मैंने तत्काल सहमति में अपना सिर हिलाया, हालाँकि मुझे थोड़ा सा डर भी लग रहा था। उनके शब्दों और मुस्कराहट के पीछे बहुत ताक़त थी।

"अच्छा, यह रहा मेरा ऑफ़र। मैं तुम्हें सिखाऊँगा लेकिन मैं ऐसा क्लासरूम की शैली में नहीं करूँगा। अगर तुम मेरे लिए काम करोगे, तो उसके बदले में मैं तुम्हें सिखाऊँगा। तुम मेरे लिए काम नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें नहीं सिखाऊँगा। अगर तुम काम करते हो, तो मैं तुम्हें ज़्यादा तेज़ी से सिखा सकता हूँ और अगर तुम सिर्फ़ बैठकर मेरी बातें सुनते हो जैसा कि तुम लोग स्कूल में करते हो तो इससे मेरा समय बर्बाद होगा। यह मेरा ऑफ़र है। इसे या तो

Scanned by CamScanner

मान लो या फिर वापस लौट जाओ।"

"क्या मैं आपसे पहले एक सवाल कर सकता हूँ?" मैंने पूछा।

"नहीं। इसे या तो मान लो या फिर वापस लौट जाओ। मेरे पास बर्बाद करने के लिए फ़ालतू समय नहीं है। अभी ढेर सा काम पड़ा हुआ है। अगर तुममें तत्काल फ़ैसला करने की क्षमता नहीं है तो तुम कभी पैसे कमाना नहीं सीख पाओगे। मौक़े आते हैं और चले जाते हैं। इसलिए तत्काल निर्णय लेने की क्षमता एक महत्वपूर्ण कला है। तुमने जैसा चाहा था, वैसा एक मौक़ा तुम्हारे सामने मौजूद है। अगले दस सेकंड में या तो पढ़ाई शुरू हो जाएगी या फिर यह हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगी।" माइक के डैडी ने चिढ़ाने वाली मुस्कराहट के साथ कहा।

"मंज़ूर," मैंने कहा।

"मंज़ूर," माइक ने कहा।

"बहुत बढ़िया," माइक के डैडी ने कहा। "दस मिनट में मिसेज़ मार्टिन आ जाएँगी। उनसे बातें करने के बाद मैं तुम्हें उनके साथ भेज दूँगा और तुम लोगों का काम शुरू हो जाएगा। मैं तुम्हें हर घंटे के दस सेंट दूँगा और तुम हर शनिवार तीन घंटे काम करोगे।"

"पर आज तो मेरा सॉफ़्टबॉल का मैच है।" मैंने कहा।

माइक के डैडी ने अपनी आवाज़ को धीमा परंतु कड़क करके कहा, "या तो मान लो या फिर वापस लौट जाओ।"

"मान लिया," मैंने जवाब दिया। सॉफ़्टबॉल खेलने के बजाय काम करने और सीखने का विकल्प चुनने में ही समझदारी थी।

30 सेंट बाद

शनिवार की ख़ुशनुमा सुबह 9 बजे माइक और मैं मिसेज़ मार्टिन के साथ काम कर रहे थे। वे एक दयालु और धैर्यवान महिला थीं। वे हमेशा कहा करती थीं कि माइक और मुझे देखकर उन्हें अपने दोनों बच्चों की याद आ जाती है जो अब बड़े हो गए थे तथा दूर चले गए थे। हालाँकि वे दयालु थीं, परंतु वे कड़ी मेहनत में विश्वास करती थीं और इसलिए वे हमें हमेशा काम में जुटाए रखती थीं। वे बहुत कड़क मैनेजर थीं। हम तीन घंटे तक डिब्बाबंद सामानों को शेल्फ़ पर से उतारते थे, उनकी धूल साफ़ करते थे और फिर उन्हें क़रीने से जमाते थे। यह बड़ी मेहनत का काम था और बोरियत भरा भी।

माइक के डैडी को मैं अपना अमीर डैडी कहता हूँ। उनके पास इस तरह

Scanned by CamScanner

कन्वीनियेंस स्टोर्स के शुरुआती संस्करण थे। पड़ोस के जनरल स्टोर जहाँ लोग दूध, ब्रेड, बटर और सिगरेट जैसी चीज़ें ख़रीदते हैं। समस्या यह थी कि हवाई में एयर कंडीशनिंग नहीं थी और गर्मी के कारण स्टोर्स अपना दरवाज़ा बंद नहीं कर सकते थे। स्टोर के दोनों ओर दरवाज़ों को पूरा खुला रखा जाता था ताकि सड़क और पार्किंग की जगह सामने दिखती रहे। जब भी कोई कार पार्किंग में आती थी तो उसके साथ धूल का ग़ुबार भी आता था जो स्टोर में घुसकर डिब्बों पर जम जाता था।

इसलिए हम लोगों की नौकरी तभी तक चलती, जब तक कि एयर कंडीशनिंग नहीं हो जाती।

तीन हफ़्तों तक, माइक और मैं मिसेज़ मार्टिन के पास जाकर तीन घंटे तक काम करते रहे। दोपहर तक हमारा काम ख़त्म हो जाता था और वे हममें से हर एक के हाथ में तीन छोटे सिक्के डाल देती थीं। उस समय पचास के दशक में नौ साल की उम्र में भी 30 सेंट कमाने में कोई ख़ास ख़ुशी नहीं होती थी। तब कॉमिक्स की क़ीमत 10 सेंट हुआ करती थी इसलिए मैं अपनी कमाई को कॉमिक्स पर ख़र्च कर देता था और घर लौट जाता था।

चौथे हफ़्ते के बुधवार तक मैंने काम छोड़ने का मन बना लिया था। मैं सिर्फ़ इसलिए काम करने के लिए तैयार हुआ था क्योंकि मैं माइक के डैडी से पैसा कमाना सीखना चाहता था। इसीलिए मैं 10 सेंट प्रति घंटे की ग़ुलामी कर रहा था। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उस पहले शनिवार के बाद से मैंने माइक के डैडी को देखा तक नहीं था।

"मैं काम छोड़ रहा हूँ," मैंने लंच के समय माइक से कहा। स्कूल लंच बड़ा निराशाजनक था। स्कूल भी उबाऊ था और अब तो मेरे पास शनिवार भी नहीं थे जिसका मैं इंतज़ार कर सकूँ। परंतु 30 सेंट के कारण मुझे धक्का पहुँचा था।

इस बार माइक मुस्कराया।

"तुम किस बात पर हँस रहे हो?" मैंने ग़ुस्से और कुंठा से पूछा।

"डैडी ने कहा था कि ऐसा ही होगा। उन्होंने कहा था कि जब तुम काम छोड़ने का फ़ैसला कर लो तब वे तुमसे मिलना चाहेंगे।"

"क्या?" मैंने आवेश में पूछा। "क्या वे मेरे उकता जाने का इंतज़ार कर रहे थे?"

"कुछ-कुछ," माइक ने कहा। "मेरे डैडी ज़रा अलग क़िस्म के हैं। उनका सिखाने का तरीक़ा तुम्हारे डैडी के पढ़ाने के तरीक़े से बिलकुल अलग है। तुम्हारे मम्मी-डैडी बहुत बातें करते हैं। दूसरी तरफ़ मेरे डैडी बहुत कम बोलते हैं। तुम सिर्फ़ इस शनिवार तक इंतज़ार कर लो। मैं उन्हें बता दूँगा कि तुमने काम छोड़ने का फ़ैसला कर लिया है।"

Scanned by CamScanner

"इसका मतलब यह है कि मेरे साथ नाटक खेला गया है?"

"नहीं, ऐसा नहीं हुआ है, पर शायद हो सकता है। डैडी शनिवार को इसके बारे में समझाएँगे।"

शनिवार को लाइन में लगकर इंतज़ार करते हुए

मैं उनका सामना करने के लिए तैयार था। यहाँ तक कि मेरे असली डैडी भी उनसे नाराज़ थे। मेरे असली डैडी, जिन्हें मैं ग़रीब डैडी कहता हूँ, यह मानते थे कि मेरे अमीर डैडी बाल श्रम क़ानूनों का उल्लंघन कर रहे थे और इस पूरे मामले की जाँच होनी चाहिए।

मेरे पढ़े-लिखे ग़रीब डैडी ने मुझसे यह कहा कि मैं सही तनख़्वाह माँगूँ। कम से कम 25 सेंट प्रति घंटा। मेरे ग़रीब डैडी ने मुझसे कहा कि अगर मेरी तनख़्वाह नहीं बढ़ती है, तो मुझे तत्काल नौकरी छोड़ देनी चाहिए।

"और वैसे भी तुम्हें उस घटिया काम की कोई ज़रूरत नहीं है," मेरे ग़रीब डैडी ने झल्लाकर कहा।

शनिवार को सुबह 8 बजे मैं एक बार फिर माइक के घर के उसी पुराने दरवाज़े के अंदर घुस रहा था।

"कुर्सी पर बैठो और लाइन में इंतज़ार करो," माइक के डैडी ने मेरे घुसते ही कहा। फिर वे अंदर जाकर अपने छोटे से ऑफ़िस में बैठ गए जो बेडरूम के पास था।

मैंने कमरे में चारों तरफ़ देखा, परंतु मुझे माइक नहीं दिखा। अजीब सा महसूस करते हुए मैं उन्हीं दोनों महिलाओं के बग़ल में बैठ गया जो मुझे चार हफ़्ते पहले वहीं पर मिली थीं। वे मुस्कराईं और सोफ़े पर थोड़ी सी खिसक गईं ताकि मैं भी बैठ सकूँ।

पैंतालीस मिनट गुज़र गए थे और मैं उबल रहा था। दोनों महिलाएँ उनसे मिलकर तक़रीबन तीस मिनट पहले वहाँ से जा चुकी थीं। एक बूढ़ा सा आदमी वहाँ बीस मिनट तक बैठा और फिर वह भी निकलकर चला गया।

घर ख़ाली था और हवाई में ख़ुशनुमा सुबह को मैं सीलन भरे अँधेरे लिविंग रूम में बैठा हुआ था, और इस बात का इंतज़ार कर रहा था कि एक लालची और बच्चों का शोषण करने वाला आदमी मुझसे बातें करे। मैं सुन सकता था कि वे फ़ोन पर बातें कर रहे थे, ऑफ़िस में इधर-उधर के काम कर रहे थे और मुझे नज़रअंदाज़ कर रहे थे। मेरी इच्छा तो हो रही थी कि मैं उस घमंडी आदमी से बिना मिले ही घर लौट जाऊँ, पर किसी वजह से मैं रुक गया।

आख़िर पंद्रह मिनट बाद, ठीक 9 बजे, अमीर डैडी अपने ऑफ़िस से

Scanned by CamScanner

बाहर निकले। बिना कुछ कहे उन्होंने हाथ से मुझे इशारा किया कि मैं उनके दड़बेनुमा ऑफ़िस में आ जाऊँ।

अमीर डैडी ने अपनी ऑफ़िस कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "या तो तुम्हारी तनख़्वाह बढ़ाई जाए, या तुम काम छोड़ रहे हो, है ना?"

"हाँ, समझौते के मुताबिक़ आप अपनी शर्त पूरी नहीं कर रहे हैं," मैंने लगभग आँसुओं से भीगे स्वर में कहा। नौ साल के बच्चे के लिए एक वयस्क का सामना करना बहुत ज़्यादा डरावना था।

"आपने कहा था कि अगर मैं आपके लिए काम करूँगा तो आप मुझे पैसा कमाना सिखाएँगे। अपनी तरफ़ से मैंने आपके लिए काम किया है। मैंने कड़ी मेहनत की है। इस काम के लिए मैंने अपने बेसबॉल गेम की भी क़ुर्बानी दी है। और अब आप अपने वादे से मुकर रहे हैं। आपने मुझे कुछ भी नहीं सिखाया है। आप धोखेबाज़ हैं, जैसा शहर के सभी लोग कहते हैं। आप लालची हैं। आप केवल पैसा कमाना चाहते हैं और अपने कर्मचारियों का बिलकुल ध्यान नहीं रखते। आपने मुझे इतनी देर तक बाहर बिठाए रखा और मेरी ज़रा भी इज़्ज़त नहीं की। मैं एक छोटा सा बच्चा हूँ और आपको मेरे साथ इससे बेहतर बर्ताव करना चाहिए था।"

अमीर डैडी अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए। अपने हाथों को ठुड्डी तक लाकर उन्होंने मुझे घूरा। ऐसा लग रहा था जैसे वे मेरा विश्लेषण कर रहे थे।

"बुरा नहीं है," उन्होंने कहा। "एक महीने से भी कम समय में, तुम वही भाषा बोल रहे हो जो मेरे ज़्यादातर कर्मचारी बोलते हैं।"

"क्या?" मैंने पूछा। मैं समझ नहीं पा रहा था कि वे क्या कह रहे थे और इसलिए मैंने अपना दुखड़ा रोना चालू रखा। "मुझे लगता था कि आप अपने वादे पर क़ायम रहेंगे और मुझे कुछ सिखाएँगे। इसके बजाय आप तो मुझ पर अत्याचार करना चाहते हैं? यह तो ज़ुल्म है। सरासर ज़ुल्म।"

"मैं तुम्हें सिखा तो रहा हूँ," अमीर डैडी ने धीमी आवाज़ में कहा।

"आपने मुझे क्या सिखाया है? कुछ भी नहीं!" मैंने ग़ुस्से से कहा। "एक बार मैं चंद सिक्कों में काम करने के लिए तैयार हो गया, उसके बाद तो आपने मुझसे बात तक नहीं की। दस सेंट प्रति घंटे। मैं आपकी शिकायत सरकार से करूँगा। हमारे देश में भी बाल श्रम क़ानून है। आप तो जानते ही हैं कि मेरे डैडी सरकार के लिए काम करते हैं।"

"शाबाश!" अमीर डैडी ने कहा। "अब तुम उन ज़्यादातर लोगों की भाषा बोल रहे हो जो कभी मेरे लिए काम करते थे। वे लोग जिन्हें या तो मैंने नौकरी से निकाल दिया है या जिन्होंने ख़ुद मेरी नौकरी छोड़ दी है।"

Scanned by CamScanner

"तो इस बारे में आपको क्या कहना है?" मैंने पूछा, और मुझे यह लग रहा था कि कम उम्र के बावजूद मैं बहादुरी से बातें कर रहा था। "आपने मुझसे झूठ बोला। मैंने आपके लिए काम किया और आपने अपना वादा पूरा नहीं किया। आपने मुझे कुछ भी नहीं सिखाया।"

"कौन कहता है कि मैंने तुम्हें कुछ नहीं सिखाया है?" मेरे अमीर डैडी ने शांति से कहा।

"मैंने तीन हफ़्ते तक काम किया और इस बीच आपने सिखाना तो दूर रहा, मुझसे कभी बात तक नहीं की।" मैंने व्यंग्य भरे अंदाज़ में कहा।

"क्या सिखाने का मतलब केवल भाषण या बातचीत ही होता है?" अमीर डैडी ने पूछा।

"और क्या?" मैंने जवाब दिया।

"इस तरह से वे तुम्हें स्कूल में सिखाते हैं," उन्होंने मुस्कराकर कहा। "परंतु ज़िंदगी तुम्हें इस तरह नहीं सिखाती और मेरा यह मानना है कि ज़िंदगी सबसे बढ़िया टीचर होती है। ज़्यादातर वक़्त ज़िंदगी आपसे बातें नहीं करती। यह एक तरह से आपको धक्का देती है। हर धक्के के ज़रिए ज़िंदगी आपसे कहती है, 'जाग जाओ। मैं तुम्हें कुछ सिखाना चाहती हूँ।'"

"यह आदमी कैसी बेसिरपैर की बातें कर रहा है?" मैंने अपने आप से पूछा। "ज़िंदगी अगर मुझे धक्का देती है तो इसका मतलब यह है कि ज़िंदगी मुझसे बातें करती है?" अब मैं जान चुका था कि मुझे यह काम तत्काल छोड़ देना चाहिए। मैं किसी ऐसे आदमी से बातें कर रहा था जो पागल था और जिसे ताले में बंद रखने की ज़रूरत थी।

"अगर तुम ज़िंदगी के सबक़ सीखते हो, तो इससे तुम्हें बहुत फ़ायदा होगा। अगर तुम ऐसा नहीं करते हो, तो ज़िंदगी तुम्हें लगातार धक्के देती रहेगी। लोग दो चीज़ें करते हैं। कुछ लोग ज़िंदगी के धक्कों को सहन करते चले जाते हैं। बाक़ी लोग ग़ुस्सा हो जाते हैं और ज़िंदगी को धक्का दे देते हैं। परंतु वे धक्का देते हैं अपने बॉस को, अपने काम को, अपनी पत्नी या पति को। वे यह नहीं जानते कि ज़िंदगी उन्हें धक्का दे रही है।"

मैं नहीं जानता था कि वे किस बारे में बात कर रहे थे।

"ज़िंदगी हम सबको धक्के मारती है। कुछ लोग हार मान लेते हैं। बाक़ी के लोग लड़ते हैं। कुछ लोग सबक़ सीख लेते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। वे ज़िंदगी के धक्कों का स्वागत करते हैं। इन गिने-चुने लोगों के लिए इसका यह मतलब होता है कि उन्हें कुछ नया सीखना चाहिए। वे सीखते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। ज़्यादातर लोग छोड़ देते हैं, और कुछ लोग तुम्हारी तरह लड़ते भी हैं।"

Scanned by CamScanner

अमीर डैडी खड़े हो गए और उन्होंने टूटी-फूटी खिड़की को बंद कर दिया। "अगर तुम यह सबक़ सीख लेते हो, तो तुम एक समझदार, अमीर और सुखी युवक बन सकते हो। अगर तुम यह नहीं सीखते हो तो तुम ज़िंदगी भर अपनी समस्याओं के लिए अपनी नौकरी, कम तनख़्वाह या अपने बॉस को कोसते रहोगे। तुम हमेशा ऐसे बड़े मौक़े की उम्मीद करते रहोगे जो आए और तुम्हारी आर्थिक समस्याओं को सुलझा दे।"

अमीर डैडी ने मेरी तरफ़ देखा कि क्या मैं अब भी उनकी बात सुन रहा हूँ। उनकी आँखें मेरी आँखों से मिलीं। हम एक-दूसरे की तरफ़ देखते रहे और हमारी आँखों के बीच संप्रेषण की धाराएँ बहने लगीं। आख़िर जब मैं उनके संदेश का मतलब समझ गया तो मैंने अपनी नज़रें झुका लीं। मैं जान गया था कि वे सही थे। मैं उन्हें दोषी ठहरा रहा था जबकि सीखने की ज़िद मेरी ही थी। मैं फ़ालतू में ही लड़ रहा था।

अमीर डैडी ने आगे कहा, "अगर आप इस तरह के आदमी हैं जिसमें हिम्मत नहीं है तो आप ज़िंदगी के हर थपेड़े के सामने हार मान जाते हैं। अगर आप इस क़िस्म के आदमी हैं तो आप ज़िंदगी भर सुरक्षित खेल खेलते रहेंगे, सही चीज़ें करते रहेंगे और किसी ऐसे वक़्त का इंतज़ार करते रहेंगे जो आने वाला नहीं है। और फिर, आप एक बोरिंग बुड्ढे की तरह मर जाएँगे। आपके बहुत से दोस्त होंगे जो आपकी सिर्फ़ इसलिए तारीफ़ करेंगे क्योंकि आप एक मेहनती और भले आदमी थे। आपने अपनी ज़िंदगी सुरक्षित खेल खेलने और सही चीज़ें करने में गुज़ार दी। परंतु सच बात तो यह है कि आपने ज़िंदगी के थपेड़ों के सामने घुटने टेक दिए। आप ख़तरा मोल लेने की कल्पना तक से डरते थे। हक़ीक़त में तो आप जीतना चाहते थे, परंतु आपके लिए हारने का डर जीतने के रोमांच से ज़्यादा ताक़तवर साबित हुआ। अंदर से आप और केवल आप जान पाएँगे कि आपने कभी जीतने की कोशिश नहीं की। आपने सुरक्षित खेल खेलने का विकल्प चुना।"

हमारी नज़रें एक बार फिर मिलीं। दस सेकंड तक हम एक-दूसरे की तरफ़ देखते रहे, और एक बार फिर मैंने तभी नज़रें हटाईं जब मैं उनकी बात का मतलब समझ गया।

"आप मुझे धक्का दे रहे थे?" मैंने पूछा।

"कुछ लोग ऐसा कह सकते हैं," अमीर डैडी मुस्कराए। "मैं तो यही कहूँगा कि मैं तुम्हें ज़िंदगी का स्वाद चखा रहा था।"

"कैसा स्वाद?" मैंने पूछा, मैं अब भी ग़ुस्सा था, परंतु अब मेरी जिज्ञासा भी जाग गई थी। अब मैं सीखने के लिए भी तैयार था।

"तुम दोनों ऐसे पहले लोग हो जिन्होंने मुझसे पैसा बनाने की कला

Scanned by CamScanner

सीखने का आग्रह किया। मेरे पास 150 से भी ज़्यादा कर्मचारी हैं पर उनमें से एक ने भी मुझसे पैसा कमाने की कला के बारे में कभी नहीं पूछा। वे मुझसे नौकरी माँगते हैं, तनख़्वाह माँगते हैं परंतु पैसा बनाने की कला नहीं सीखना चाहते। तो ज़्यादातर लोग इसी तरह अपनी ज़िंदगी के सबसे बेहतरीन साल पैसे के लिए काम करने में बर्बाद कर देंगे, और आख़िर तक यह कभी समझ ही नहीं पाएँगे कि दरअसल वे किसके लिए काम कर रहे हैं।"

मैं पूरा ध्यान लगाकर उनकी बात सुनता रहा।

"तो जब माइक ने मुझसे कहा कि तुम पैसा कमाने की कला सीखना चाहते हो, तो मैंने एक ऐसा कोर्स तैयार किया जो असली ज़िंदगी के क़रीब था। मैं बोलते-बोलते थक जाता, परंतु तुम कभी मेरी बात का मतलब नहीं समझ पाते। इसलिए मैंने यह फ़ैसला किया कि तुम्हें ज़िंदगी के थपेड़ों का स्वाद चखा दिया जाए ताकि तुम मेरी बात सुन भी सको और समझ भी सको। इसी कारण मैंने तुम्हें एक घंटे के 10 सेंट दिए थे।"

"तो 10 सेंट प्रति घंटे काम करने के बाद मैंने क्या सबक़ सीखा?" मैंने पूछा। "यही कि आप घटिया हैं और अपने कर्मचारियों का शोषण करते हैं।"

अमीर डैडी अपनी कुर्सी पर पीछे की तरफ़ झुकते हुए ज़ोर से हँसने लगे। जब उनकी हँसी बंद हुई तो उन्होंने कहा, "अच्छा होगा अगर तुम अपना सोचने का नज़रिया बदल लो। मुझे समस्या मत मानो। मुझे दोष देना छोड़ दो। अगर तुम सोचते हो कि तुम्हारी समस्या मैं हूँ, तो तुम्हें मुझे बदलना होगा। इसके बजाय अगर तुम्हें यह लगता है कि तुम्हारी समस्या तुम ख़ुद हो, तो तुम ख़ुद को बदल सकते हो, सीख सकते हो और ज़्यादा समझदार बन सकते हो। ज़्यादातर लोग चाहते हैं कि दुनिया का हर आदमी बदल जाए, बस हम ख़ुद ही न बदलें। मैं तुम्हें यह बता दूँ कि किसी दूसरे को बदलने से ज़्यादा आसान यह है कि हम ख़ुद को बदल लें।"

"मैं आपकी बात ठीक से समझ नहीं पाया," मैंने कहा।

"अपनी समस्याओं के लिए मुझे दोष देना छोड़ दो," अमीर डैडी ने अधीरता से कहा।

"पर आपने मुझे सिर्फ़ 10 सेंट का ही वेतन दिया।"

"तो तुमने क्या सीखा?" अमीर डैडी ने मुस्कराकर पूछा।

"यही कि आप घटिया हैं।" मैंने शरारत भरी मुस्कान के साथ कहा।

"अच्छा, तो तुम यह सोचते हो कि समस्या मैं हूँ," अमीर डैडी ने कहा।

"वो तो आप हैं ही।"

Scanned by CamScanner

"ख़ैर, इसी तरीक़े से सोचते रहो और तुम ज़िंदगी भर कुछ नहीं सीख पाओगे। अगर तुम्हारा नज़रिया यही है कि समस्या मैं हूँ तो तुम्हारे पास क्या विकल्प रह जाते हैं?"

"अगर आप मेरी तनख़्वाह नहीं बढ़ाते या मुझे ज़्यादा इज़्ज़त नहीं देते हैं तो मैं काम छोड़कर चला जाऊँगा।"

"ठीक कहा," अमीर डैडी ने कहा। "और ज़्यादातर लोग यही करते हैं। वे काम छोड़कर चले जाते हैं और दूसरी नौकरी की तलाश करते हैं, जहाँ उन्हें बेहतर मौक़े और ज़्यादा अच्छी तनख़्वाह मिले। उन्हें यह ग़लतफ़हमी होती है कि नई नौकरी या ज़्यादा तनख़्वाह से उनकी समस्या सुलझ सकती है। ज़्यादातर मामलों में ऐसा नहीं होता।"

"तो समस्या किस तरह सुलझ सकती है?" मैंने पूछा। "10 सेंट प्रति घंटे के हिसाब से तनख़्वाह लेकर मुस्कराते हुए?"

अमीर डैडी मुस्कराए। "यही बाक़ी के लोग करते हैं। वे यह जानते हुए भी कम तनख़्वाह में काम करते हैं क्योंकि नौकरी छूट जाने पर उनका और उनके परिवार का पेट कैसे भरेगा। इसीलिए मन मसोसकर वे नौकरी करते हैं, और यह सोचकर तनख़्वाह बढ़ने का इंतज़ार करते हैं कि ज़्यादा पैसा आने से समस्या सुलझ जाएगी। ज़्यादातर लोग ऐसा ही सोचते हैं और कड़ी मेहनत करते हुए दूसरी नौकरी भी कर लेते हैं, परंतु उसमें भी उन्हें तनख़्वाह कम ही मिलती है।"

मैं फ़र्श को घूरता रहा। अब मैं अमीर डैडी के सबक़ को समझने लगा था। मुझे यह एहसास हो गया था कि यह ज़िंदगी का स्वाद है। आख़िरकार मैंने ऊपर की ओर देखा और अपना सवाल दोहराया, "तो फिर यह समस्या किस तरह सुलझेगी?"

इस सवाल के जवाब में अमीर डैडी ने मुझे वह बेशक़ीमती नज़रिया दिया जो उन्हें अपने कर्मचारियों और मेरे ग़रीब डैडी से अलग करता था – और जिसकी बदौलत वे हवाई के सबसे अमीर आदमी बनने वाले थे, जबकि मेरे पढ़े-लिखे ग़रीब डैडी ज़िंदगी भर पैसे की तंगी से जूझने वाले थे। यह एक अद्‌भुत नज़रिया था जिसने मेरी ज़िंदगी का नक़्शा ही बदल दिया।

अमीर डैडी ने बार-बार मुझे यह नज़रिया याद दिलाया, जिसे मैं पहला सबक़ कहूँगा।

"ग़रीब और मध्य वर्गीय लोग पैसे के लिए काम करते हैं।"
"अमीरों के लिए पैसा काम करता है।"

मेरे ग़रीब डैडी ने जो शिक्षा मुझे दी थी, शनिवार की उस ख़ुशनुमा सुबह मैं उससे बिलकुल अलग नज़रिया सीख रहा था। नौ साल की उम्र में मैं यह समझ

Scanned by CamScanner

गया था कि दोनों ही डैडी चाहते थे कि मैं सीखूँ। दोनों ही डैडी मुझे पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे... फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि दोनों के सुझाए विषय अलग-अलग थे।

मेरे पढ़े-लिखे डैडी चाहते थे कि मैं वही करूँ जो उन्होंने किया था। "बेटे, मैं चाहता हूँ कि तुम मेहनत से पढ़ो, अच्छे नंबर लाओ ताकि तुम्हें किसी बड़ी कंपनी में सुरक्षित नौकरी मिल सके। और यह अच्छी तरह देख लो कि इसमें बहुत से दूसरे लाभ हों।" मेरे अमीर डैडी चाहते थे कि मैं यह सीखूँ कि पैसा कैसे काम करता है ताकि मैं इससे अपने लिए काम करवा सकूँ। यह सबक़ मुझे जीवन भर उनके मार्गदर्शन में सीखना था, न कि किसी क्लासरूम में।

मेरे अमीर डैडी ने मेरा पहला सबक़ जारी रखा, "मैं ख़ुश हूँ कि तुम 10 सेंट प्रति घंटे के हिसाब से काम करने पर ग़ुस्सा हो गए। अगर तुम ग़ुस्सा नहीं हुए होते और तुम ऐसा ख़ुशी-ख़ुशी करते रहते तो मैं तुमसे साफ़ कह देता कि मैं तुम्हें नहीं सिखा सकता। यह जान लो कि सच्ची शिक्षा में ऊर्जा, प्रबल भावना और ज़बर्दस्त इच्छा की ज़रूरत होती है। ग़ुस्सा उस फ़ॉर्मूले का एक बहुत बड़ा हिस्सा है, क्योंकि प्रबल भावना में ग़ुस्से और प्रेम का समन्वय होता है। जब पैसे की बात आती है, तो ज़्यादातर लोग सुरक्षित रास्ता खोजते हैं। इसलिए प्रबल भावना उन्हें राह नहीं दिखा पाती। उन्हें राह दिखाता है उनका डर।"

"तो क्या इसीलिए वे कम तनख़्वाह पर काम करने के लिए राज़ी हो जाते हैं?" मैंने पूछा।

"हाँ," अमीर डैडी ने कहा। "कुछ लोग कहते हैं कि मैं लोगों का शोषण करता हूँ क्योंकि मैं उन्हें उतनी तनख़्वाह नहीं देता जितनी उन्हें शुगर प्लांटेशन या सरकार की तरफ़ से मिलती है। मैं यही कहना चाहता हूँ कि लोग ख़ुद अपना शोषण करते हैं। डरते वे हैं, मैं नहीं।"

"पर क्या आपको नहीं लगता कि आपको उन्हें ज़्यादा तनख़्वाह देनी चाहिए?" मैंने पूछा।

"मुझे ज़्यादा देने की ज़रूरत ही नहीं है। और इसके अलावा, ज़्यादा पैसा मिलने से उनकी समस्या नहीं सुलझेगी। अपने डैडी को ही देख लो। वे बहुत सा पैसा कमाते हैं और फिर भी वे अपने बिलों का भुगतान नहीं कर पाते। दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें अगर ज़्यादा पैसा मिल जाए तो वे ज़्यादा क़र्ज़ में डूब जाएँगे।"

"तो इसी कारण आपने मुझे 10 सेंट प्रति घंटे की तनख़्वाह दी," मैंने मुस्कराते हुए कहा। "यह सबक़ का हिस्सा था।"

"बिलकुल सही," अमीर डैडी ने मुस्कराकर कहा। "देखो, तुम्हारे डैडी

Scanned by CamScanner

गया था कि दोनों ही डैडी चाहते थे कि मैं सीखूँ। दोनों ही डैडी मुझे पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे... फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि दोनों के सुझाए विषय अलग-अलग थे।

मेरे पढ़े-लिखे डैडी चाहते थे कि मैं वही करूँ जो उन्होंने किया था। "बेटे, मैं चाहता हूँ कि तुम मेहनत से पढ़ो, अच्छे नंबर लाओ ताकि तुम्हें किसी बड़ी कंपनी में सुरक्षित नौकरी मिल सके। और यह अच्छी तरह देख लो कि इसमें बहुत से दूसरे लाभ हों।" मेरे अमीर डैडी चाहते थे कि मैं यह सीखूँ कि पैसा कैसे काम करता है ताकि मैं इससे अपने लिए काम करवा सकूँ। यह सबक़ मुझे जीवन भर उनके मार्गदर्शन में सीखना था, न कि किसी क्लासरूम में।

मेरे अमीर डैडी ने मेरा पहला सबक़ जारी रखा, "मैं ख़ुश हूँ कि तुम 10 सेंट प्रति घंटे के हिसाब से काम करने पर ग़ुस्सा हो गए। अगर तुम ग़ुस्सा नहीं हुए होते और तुम ऐसा ख़ुशी-ख़ुशी करते रहते तो मैं तुमसे साफ़ कह देता कि मैं तुम्हें नहीं सिखा सकता। यह जान लो कि सच्ची शिक्षा में ऊर्जा, प्रबल भावना और ज़बर्दस्त इच्छा की ज़रूरत होती है। ग़ुस्सा उस फ़ॉर्मूले का एक बहुत बड़ा हिस्सा है, क्योंकि प्रबल भावना में ग़ुस्से और प्रेम का समन्वय होता है। जब पैसे की बात आती है, तो ज़्यादातर लोग सुरक्षित रास्ता खोजते हैं। इसलिए प्रबल भावना उन्हें राह नहीं दिखा पाती। उन्हें राह दिखाता है उनका डर।"

"तो क्या इसीलिए वे कम तनख़्वाह पर काम करने के लिए राज़ी हो जाते हैं?" मैंने पूछा।

"हाँ," अमीर डैडी ने कहा। "कुछ लोग कहते हैं कि मैं लोगों का शोषण करता हूँ क्योंकि मैं उन्हें उतनी तनख़्वाह नहीं देता जितनी उन्हें शुगर प्लांटेशन या सरकार की तरफ़ से मिलती है। मैं यही कहना चाहता हूँ कि लोग ख़ुद अपना शोषण करते हैं। डरते वे हैं, मैं नहीं।"

"पर क्या आपको नहीं लगता कि आपको उन्हें ज़्यादा तनख़्वाह देनी चाहिए?" मैंने पूछा।

"मुझे ज़्यादा देने की ज़रूरत ही नहीं है। और इसके अलावा, ज़्यादा पैसा मिलने से उनकी समस्या नहीं सुलझेगी। अपने डैडी को ही देख लो। वे बहुत सा पैसा कमाते हैं और फिर भी वे अपने बिलों का भुगतान नहीं कर पाते। दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें अगर ज़्यादा पैसा मिल जाए तो वे ज़्यादा क़र्ज़ में डूब जाएँगे।"

"तो इसी कारण आपने मुझे 10 सेंट प्रति घंटे की तनख़्वाह दी," मैंने मुस्कराते हुए कहा। "यह सबक़ का हिस्सा था।"

"बिलकुल सही," अमीर डैडी ने मुस्कराकर कहा। "देखो, तुम्हारे डैडी

Scanned by CamScanner

स्कूल गए और उन्होंने बहुत बढ़िया शिक्षा इसलिए हासिल की ताकि उन्हें अच्छी तनख़्वाह वाली नौकरी मिल सके। जो उन्हें मिल गई। परंतु उनके पास आज भी पैसे की तंगी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने स्कूल में पैसे के बारे में कुछ भी नहीं सीखा। और सबसे बड़ी बात यह है कि वे पैसे के लिए काम करने में भरोसा करते हैं।"

"और आप नहीं करते?" मैंने पूछा।

"नहीं, सच पूछा जाए तो नहीं," अमीर डैडी ने कहा। "अगर तुम पैसे के लिए काम करना सीखना चाहते हो, तो स्कूल में ही रहो। यह सीखने के लिए उससे बढ़िया जगह कोई नहीं है। परंतु अगर तुम यह सीखना चाहते हो कि पैसा तुम्हारे लिए किस तरह काम करे, तो यह मैं तुम्हें सिखा सकता हूँ। परंतु तभी, जब तुम यह सीखना चाहो।"

"क्या हर कोई यह नहीं सीखना चाहता?" मैंने पूछा।

"नहीं," अमीर डैडी ने कहा। "सिर्फ़ इसलिए क्योंकि पैसे के लिए काम करना ज़्यादा आसान है, ख़ासकर तब जब पैसे के बारे में आपकी मूल भावना डर हो।"

"मैं समझ नहीं पाया," मैंने त्यौरियाँ चढ़ाकर कहा।

"उसकी चिंता फ़िलहाल मत करो। अभी इतना ही समझ लो कि डर के कारण ही ज़्यादातर लोग अपनी नौकरी कर रहे हैं। अपने बिलों का भुगतान न कर पाने का डर। नौकरी से निकाल दिया जाएगा, इस बात का डर। पर्याप्त पैसा न होने का डर। एक बार फिर से शुरू करने का डर। यह किसी व्यवसाय को सीखने और पैसे के लिए काम करने की क़ीमत है। ज़्यादातर लोग पैसे के ग़ुलाम बन जाते हैं... और फिर वे अपने बॉस पर अपनी भड़ास निकालते हैं।"

"तो आपकी नज़र में पैसे से अपने लिए काम करवाना एक बिलकुल अलग विषय है?" मैंने पूछा।

"बिलकुल," अमीर डैडी ने जवाब दिया, "बिलकुल।"

शनिवार की उस ख़ुशनुमा सुबह हवाई में हम लोग चुपचाप बैठे रहे। मेरे दोस्त उस समय लिटिल लीग बेसबॉल गेम शुरू कर ही रहे होंगे। पर किसी वजह से मैं ख़ुश था कि मैंने 10 सेंट प्रति घंटे के हिसाब से काम करने का फ़ैसला किया था। मुझे लगा कि मैं कुछ ऐसा सीखने जा रहा था जो मेरे दोस्त स्कूल में कभी नहीं सीख पाएँगे।

"सीखने के लिए तैयार?" अमीर डैडी ने पूछा।

"बिलकुल," मैंने दाँत निकालकर कहा।

"मैंने अपना वादा निभाया है। मैंने तुम्हें दूर बैठे-बैठे भी सिखाया है,"

Scanned by CamScanner

अमीर डैडी ने कहा। "नौ साल की उम्र में तुम्हें इस बात का पता चल चुका है कि पैसे के लिए काम करना कैसा होता है। अपने पिछले महीने को पचास सालों से गुणा कर लो और तुम्हें इस बात का अंदाज़ हो जाएगा कि ज़्यादातर लोगों की ज़िंदगी किस तरह गुज़रती है।"

"मैं समझ नहीं पाया," मैंने कहा।

"जब तुम मुझसे मिलने के लिए लाइन में इंतज़ार कर रहे थे, तो तुम्हें कैसा लग रहा था? एक बार नौकरी के लिए और दूसरी बार तनख़्वाह बढ़वाने के लिए?"

"भयानक," मैंने कहा।

"अगर तुम पैसे के लिए काम करने का विकल्प चुनते हो, तो ज़्यादातर लोगों के लिए ज़िंदगी का मतलब यही होता है," अमीर डैडी ने कहा।

"और तुम्हें तब कैसा लगा था जब मिसेज़ मार्टिन ने तुम्हारे हाथ में तीन घंटे के काम के लिए तीन सिक्के थमाए थे?"

"मुझे लगा था कि यह काफ़ी नहीं है। मुझे लग रहा था कि यह कुछ भी नहीं है। मैं निराश हुआ था," मैंने कहा।

"और यही ज़्यादातर कर्मचारियों को लगता है जब वे अपनी तनख़्वाह के चेक को देखते हैं। ख़ासकर तब जब उससे टैक्स और बाक़ी कटौतियाँ कर ली जाती हैं। कम से कम तुम्हें तो पूरी तनख़्वाह मिलती थी, उन्हें तो पूरी तनख़्वाह भी नहीं मिलती।"

"आपका मतलब है कि ज़्यादातर कर्मचारियों को पूरी तनख़्वाह नहीं मिलती?" मैं हैरान था।

"नहीं!" अमीर डैडी ने कहा। "सरकार हमेशा अपना हिस्सा पहले ही ले लेती है।"

"सरकार ऐसा कैसे करती है?" मैंने पूछा।

"टैक्स," अमीर डैडी ने कहा। "जब आप कमाते हैं तो आप पर टैक्स लगता है। जब आप ख़र्च करते हैं तो आप पर टैक्स लगता है। जब आप बचाते हैं तो आप पर टैक्स लगता है। जब आप मर जाते हैं तो भी आप पर टैक्स लगता है।"

"लोग सरकार को ऐसा क्यों करने देते हैं?"

"अमीर लोग ऐसा नहीं करने देते," अमीर डैडी ने मुस्कराकर कहा। "परंतु ग़रीब और मध्य वर्गीय लोग ऐसा करने देते हैं। मैं दावा करता हूँ कि मैं तुम्हारे डैडी से ज़्यादा कमाता हूँ, परंतु वे ज़्यादा टैक्स चुकाते हैं।"

Scanned by CamScanner

"यह कैसे संभव है?" मैंने पूछा। नौ साल का बच्चा इस अजीब आँकड़े को समझ नहीं पा रहा था। "कोई आदमी सरकार को ऐसा करने की इजाज़त कैसे दे सकता है?"

अमीर डैडी चुपचाप बैठे रहे। मैं समझ गया कि वे चाहते थे कि मैं सुनूँ, न कि उनसे फ़ालतू के सवाल करूँ। आख़िर मैं शांत हो गया। जो मैंने सुना था, वह मुझे अच्छा नहीं लगा था। मैं जानता था कि मेरे डैडी हमेशा टैक्स का रोना रोते रहते थे, परंतु दरअसल इस बारे में वे कुछ भी नहीं कर पाते थे। क्या ज़िंदगी उन्हें धक्का दे रही थी?

अमीर डैडी मेरी तरफ़ देखते हुए अपनी कुर्सी में धीमे-धीमे और ख़ामोशी से हिलने लगे।

"सीखने के लिए तैयार?" उन्होंने पूछा।

मैंने अपना सिर धीमे से हिलाया।

"जैसा मैंने कहा, सीखने के लिए बहुत कुछ है। पैसे से अपने लिए काम कैसे करवाया जाए, यह ज़िंदगी भर चलने वाली पढ़ाई है। ज़्यादातर लोग चार साल के लिए कॉलेज जाते हैं और उनकी पढ़ाई पूरी हो जाती है। मैं पहले से ही जानता हूँ कि मेरी धन संबंधी पढ़ाई जीवन भर चलेगी, और इसकी वजह यह है कि मैं जितना ज़्यादा जान लेता हूँ, उससे भी ज़्यादा जानने की मेरी जिज्ञासा बढ़ती चली जाती है। ज़्यादातर लोग इस विषय को कभी नहीं पढ़ते। वे नौकरी पर जाते हैं, अपनी तनख़्वाह लेते हैं, अपनी चेकबुक को बैलेंस करते हैं और बात ख़त्म हो जाती है। इसके बाद भी उन्हें अचरज होता है कि उनके जीवन में पैसे की समस्याएँ क्यों हैं। फिर, वे सोचते हैं कि ज़्यादा पैसों से उनकी समस्या हल हो जाएगी। बहुत कम लोगों को यह एहसास होता है कि असली समस्या धन संबंधी शिक्षा या ज्ञान की है।"

"तो मेरे डैडी को टैक्स की समस्या इसलिए है क्योंकि उनमें पैसे की समझ नहीं है?" मैंने विचलित होकर पूछा।

"देखो," अमीर डैडी ने कहा। "पैसे से अपने लिए कैसे काम करवाया जाए, टैक्स तो उस शिक्षा का सिर्फ़ एक हिस्सा है। आज तो मैं सिर्फ़ यह देखना चाहता था कि तुममें अब भी पैसे के बारे में सीखने की प्रबल इच्छा बची है या नहीं। ज़्यादातर लोगों में सीखने की प्रबल इच्छा नहीं होती। वे स्कूल जाना चाहते हैं, कोई व्यवसाय सीखना चाहते हैं, अपनी नौकरी में मज़े करना चाहते हैं और ढेर सारा पैसा कमाना चाहते हैं। एक दिन वे तब जागते हैं जब उनके सामने पैसे की समस्या आ जाती हैं और तब वे काम करना बंद नहीं कर सकते। पैसे के लिए काम करने की यही क़ीमत होती है, और उन्हें यह क़ीमत चुकानी ही पड़ती है। अगर वे पैसे से अपने लिए काम करवाना सीख लेते तो

Scanned by CamScanner

उनके सामने यह समस्या कभी नहीं आती। तो तुममें अब भी सीखने की, जानने की जिज्ञासा है?" अमीर डैडी ने पूछा।

मैंने हामी में सिर हिलाया।

"अच्छा," अमीर डैडी ने कहा।

"अब काम पर वापस जाओ। और इस बार, मैं तुम्हें बिलकुल तनख़्वाह नहीं दूँगा।"

"क्या?" मैंने हैरान होकर पूछा।

"तुमने सही सुना है। तनख़्वाह बंद। तुम हर शनिवार तीन घंटे उसी तरह काम करोगे, परंतु इस बार तुम्हें 10 सेंट प्रति घंटे के हिसाब से तनख़्वाह नहीं मिलेगी। तुम्हीं ने तो कहा है कि तुम पैसे के लिए काम करना नहीं सीखना चाहते, इसलिए मैं तुम्हें बदले में कुछ भी नहीं दूँगा।"

मुझे अपने सुने हुए शब्दों पर भरोसा नहीं हो रहा था।

"मैंने माइक से पहले ही बात कर ली है। वह पहले से ही काम कर रहा है, मुफ़्त में डिब्बों की सफ़ाई कर रहा है और उन्हें क़रीने से जमा रहा है। अब तुम भी जल्दी से जाकर काम में जुट जाओ।"

"यह ठीक नहीं है," मैं चिल्लाया। "आपको कुछ न कुछ तनख़्वाह तो देनी चाहिए।"

"तुमने कहा था कि तुम सीखना चाहते हो। अगर तुम इस बात को अभी नहीं सीख पाओगे, तो तुम भी उन्हीं दो महिलाओं और बूढ़े आदमी की तरह बन जाओगे जो मेरे लिविंग रूम में बैठे थे। ये लोग पैसे के लिए काम करते हैं और डरते हैं कि मैं उन्हें नौकरी से न निकाल दूँ। या तुम अपने डैडी की तरह बन जाओगे जो पैसा तो बहुत कमाते हैं परंतु गले तक क़र्ज़ में डूबे रहते हैं। शायद उन्हें यह उम्मीद रहती है कि ज़्यादा पैसे से उनकी समस्या सुलझ जाएगी। अगर तुम यही चाहते हो, तो मैं एक बार फिर 10 सेंट के अपने पुराने वादे पर लौटने के लिए तैयार हूँ। या तुम वह कर सकते हो जो ज़्यादातर लोग करते हैं। इस बारे में शिकायत करो कि तनख़्वाह बहुत कम है, और तुम यह नौकरी छोड़कर दूसरी नौकरी की तलाश शुरू कर दो।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूँ?" मैंने पूछा।

अमीर डैडी ने अपने सिर पर उँगली रखी। "इसका इस्तेमाल करो," उन्होंने कहा। "अगर तुम इसका सही इस्तेमाल करोगे, तो तुम मुझे जल्द ही इस बात के लिए धन्यवाद दोगे कि मैंने तुम्हें मौक़ा दिया, और एक दिन तुम बहुत अमीर आदमी बन जाओगे।"

मैं वहाँ यह सोचते हुए खड़ा था कि मुझे कितना घटिया विकल्प दिया जा

Scanned by CamScanner

रहा है। मैं यहाँ अपनी तनख़्वाह बढ़वाने आया था और अब मुझे मुफ़्त में काम करने के लिए कहा जा रहा है।

अमीर डैडी ने एक बार फिर अपनी उँगली को सिर पर रखा और कहा, "इसका इस्तेमाल करो। अब यहाँ से जाओ और अपने काम में जुट जाओ।"

सबक़ 1: अमीर लोग पैसे के लिए काम नहीं करते

मैंने अपने ग़रीब डैडी को यह नहीं बताया कि अब मैं मुफ़्त में काम कर रहा हूँ। उन्हें यह समझ में नहीं आता। मैं उन्हें इसकी वजह ठीक से इसलिए नहीं समझा सकता था, क्योंकि मैं ख़ुद भी इसे ठीक से नहीं समझ पाया था।

अगले तीन हफ़्ते, माइक और मैं तीन घंटे तक हर शनिवार को काम करते रहे, मुफ़्त में। काम बहुत परेशानी वाला नहीं था और वक़्त गुज़रने के साथ-साथ यह ज़्यादा आसान होता जा रहा था। मुझे अफ़सोस था तो अपने छूटे हुए बेसबॉल गेम्स और कॉमिक्स का। अब मैं उनका मज़ा नहीं ले सकता था।

तीसरे हफ़्ते दोपहर में अमीर डैडी आए। हमने उनके ट्रक के पार्किंग में आने की आवाज़ सुनी। वे स्टोर में घुसे और उन्होंने मिसेज़ मार्टिन को गले लगाकर अभिवादन किया। स्टोर में क्या चल रहा है, यह जानने के बाद वे आइसक्रीम फ़्रीज़र के पास गए, उसमें से दो आइसक्रीम निकालीं, उनका दाम चुकाया और इसके बाद मेरी और माइक की तरफ़ इशारा करके कहा, "चलो घूमने चलते हैं।"

हम सड़क के पार गए, कुछ कारों को चकमा दिया और एक बड़े घास के मैदान में टहलने लगे, जहाँ कुछ वयस्क सॉफ़्टबॉल खेल रहे थे। दूर की पिकनिक टेबल पर बैठकर उन्होंने माइक और मुझे आइसक्रीम दी।

"कैसा चल रहा है?"

"बढ़िया," माइक ने कहा।

मैंने सहमति में सिर हिलाया।

"कुछ और सीखा?" अमीर डैडी ने पूछा।

माइक और मैंने एक-दूसरे की तरफ़ देखा, अपने कंधे उचकाए और अपने सिर को 'ना' में एक साथ हिलाया।

ज़िंदगी के सबसे बड़े जाल से बचना

"अच्छा यह होगा कि तुम बचपन से ही यह सोचना शुरू कर दो। तुम अब ज़िंदगी के सबसे बड़े सबक़ को देख रहे हो। अगर तुम इस सबक़ को सीख

Scanned by CamScanner

लेते हो, तो तुम बहुत ज़्यादा आज़ादी और सुरक्षा भरी ज़िंदगी का सुख ले सकते हो। अगर तुम यह सबक़ नहीं सीख पाते हो, तो तुम भी मिसेज़ मार्टिन और इस पार्क में खेल रहे ज़्यादातर लोगों की तरह ही बन जाओगे। वे बहुत ज़्यादा मेहनत करते हैं, परंतु उसके बदले में उन्हें बहुत कम पैसे मिलते हैं। वे नौकरी की सुरक्षा के मोह में फँसे रहते हैं। हर साल मिलने वाली तीन हफ़्ते की छुट्टियों और पैंतालीस साल तक काम करते रहने के बाद मिलने वाली थोड़ी सी पेंशन का सपना देखते रहते हैं। अगर इस तरह की ज़िंदगी जीने में तुम्हें सुख मिलता है, तो मैं तुम्हारी तनख़्वाह बढ़ाकर 25 सेंट प्रति घंटा कर सकता हूँ।"

"परंतु ये लोग अच्छे लोग हैं और मेहनती भी हैं। फिर आप उनका मज़ाक़ क्यों उड़ा रहे हैं?" मैंने पूछा।

अमीर डैडी के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

"मिसेज़ मार्टिन मेरे लिए माँ जैसी हैं। मैं इतना कठोर नहीं हो सकता कि उनका मज़ाक़ उड़ाऊँ। यह कठोर लगता ज़रूर है क्योंकि मैं तुम दोनों के सामने स्थिति स्पष्ट करना चाहता हूँ और वह भी आसान शब्दों में। मैं तुम्हारे नज़रिए को बड़ा करना चाहता हूँ ताकि तुम कुछ आगे भी देख सको, दूर तक देख सको। ज़्यादातर लोगों को आगे देखने का फ़ायदा कई बार सिर्फ़ इसलिए नहीं मिल पाता क्योंकि उनके देखने का दायरा बहुत छोटा होता है। ज़्यादातर लोग जिस जाल में फँसे हुए हैं, वे उसे देख ही नहीं पाते।"

माइक और मैं वहाँ पर सोचते हुए बैठे रहे, क्योंकि हम उनकी बातों का मतलब पूरी तरह से नहीं समझ सके थे। उनकी बातें सुनने में कठोर और कड़वी लग रही थीं, परंतु हम यह भी जानते थे कि वे हमें कुछ सिखाने की काफ़ी कोशिश कर रहे थे।

मुस्कराहट के साथ अमीर डैडी ने कहा, "क्या 25 सेंट प्रति घंटे का ऑफ़र अच्छा नहीं लगा? क्या इससे दिल की धड़कन तेज़ नहीं हुई?"

मैंने अपना सिर 'ना' में हिलाया, जबकि असल में ऐसा ही हुआ था। एक घंटे काम के बदले में पच्चीस सेंट मेरे हिसाब से बहुत बढ़िया सौदा था।

"अच्छा, मैं तुम्हें एक घंटे के एक डॉलर दूँगा," अमीर डैडी ने शरारत भरी मुस्कान के साथ कहा।

अब मेरा दिल तूफ़ान मेल की तरह दौड़ रहा था। मेरा दिमाग़ चीख़-चीख़कर कह रहा था, "इसकी बात मान लो। मान लो।" मुझे अपने कानों पर भरोसा नहीं हो रहा था। परंतु फिर भी मैं चुप रहा।

"अच्छा, दो डॉलर प्रति घंटे।"

Scanned by CamScanner

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे छोटे से नौ साल पुराने दिमाग़ में किसी ने बम फोड़ दिया हो। 1956 में दो डॉलर प्रति घंटे की कमाई मुझे दुनिया का सबसे अमीर बच्चा बना देती। मैं इतना सारा पैसा कमाने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। मैं 'हाँ' कहना चाहता था। मैं सौदा पक्का करना चाहता था। मुझे नई सायकल दिख रही थी, नए बेसबॉल के ग्लव्ज़ दिख रहे थे। मेरे पास कड़क नोट देखकर मेरे दोस्तों की जलन और तारीफ़ भी मुझे साफ़ दिख रही थी। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि जिमी और उसके अमीर दोस्त मुझे फिर कभी ग़रीब नहीं कह सकते थे। परंतु किसी वजह से मैं ख़ामोश खड़ा रहा।

हो सकता है कि मेरे दिमाग़ में गर्मी बढ़ जाने से उसका फ्यूज़ उड़ गया हो। परंतु मन ही मन मैं 2 डॉलर प्रति घंटे का ऑफ़र मानने के लिए बेताब था।

आइसक्रीम पिघल चुकी थी और मेरे हाथ पर बह रही थी। आइसक्रीम की डंडी ख़ाली थी और इसके नीचे वैनिला और चॉकलेट के टुकड़े थे जिसके मज़े चींटियाँ ले रही थीं। अमीर डैडी हम दोनों बच्चों को देख रहे थे जो आँखें फाड़कर और ख़ाली दिमाग़ से उन्हें घूर रहे थे। उन्हें मालूम था कि वे हमारी परीक्षा ले रहे हैं और वे यह भी जानते थे कि हमारे दिल का एक कोना उस ऑफ़र को मानने के लिए बेताब हो रहा होगा। वह जानते थे कि हर व्यक्ति की आत्मा का एक हिस्सा कमज़ोर और ज़रूरतमंद होता है, जिसे ख़रीदा जा सकता है। और वे यह भी जानते थे कि हर व्यक्ति की आत्मा का एक हिस्सा मज़बूत और दृढ़ निश्चयी होता है जिसे कभी नहीं ख़रीदा जा सकता। असली सवाल यह था कि इनमें से कौन सा हिस्सा ज़्यादा ताक़तवर है। उन्होंने अपनी ज़िंदगी में हज़ारों लोगों की परीक्षा ली थी। जब वे नौकरी माँगने के लिए आए लोगों का इंटरव्यू लेते थे तो वे हर बार आत्माओं की परीक्षा लेते थे।

"अच्छा, 5 डॉलर प्रति घंटे।"

अचानक मेरे अंदर शांति छा गई। कुछ था जो बदल गया था। ऑफ़र बहुत ही बड़ा था और मूर्खतापूर्ण लग रहा था। 1956 में गिने-चुने वयस्कों को 5 डॉलर प्रति घंटे से ज़्यादा मिलता होगा। लालच ख़त्म हो गया था और इसकी जगह शांति ने ले ली थी। धीमे से मैं अपनी बाईं तरफ़ खड़े माइक की तरफ़ मुड़ा। उसने भी मेरी तरफ़ देखा। मेरी आत्मा का जो हिस्सा कमज़ोर और ज़रूरतमंद था, वह ख़ामोश हो चुका था। मेरा वह हिस्सा जिसे ख़रीदा नहीं जा सकता था, वह आगे आ चुका था। मेरे दिमाग़ और आत्मा में पैसे को लेकर हुए इस युद्ध में शांति और विश्वास जीत चुके थे। मैं जानता था कि माइक भी उसी बिंदु पर पहुँच चुका होगा।

"अच्छा," अमीर डैडी ने धीमे से कहा। "ज़्यादातर लोगों की एक क़ीमत होती है। और उनकी क़ीमत इसलिए होती है क्योंकि हम सभी में दो भावनाएँ होती हैं, डर और लालच। पहले तो पैसे के बिना रहने के डर से हमें कड़ी

Scanned by CamScanner

मेहनत करने की प्रेरणा मिलती है। इसके बाद जब हमें तनख़्वाह मिलती है, तो हममें लालच या इच्छा की भावना जाग जाती है। पैसा होने पर हम उन बढ़िया चीज़ों के बारे में सोचने पर मजबूर हो जाते हैं जो उस पैसे से ख़रीदी जा सकती हैं। इस तरह हमारी ज़िंदगी का एक पैटर्न बन जाता है।"

"किस तरह का पैटर्न?" मैंने पूछा।

"सुबह जागने, काम पर जाने, ख़र्च करने, सुबह जागने, काम पर जाने, ख़र्च करने... लोगों की ज़िंदगी हमेशा डर और लालच इन्हीं दो भावनाओं से चलती है। उन्हें अगर ज़्यादा पैसा दे भी दें, तो वे इसी पैटर्न पर चलकर अपना ख़र्च बढ़ा लेंगे। इसी पैटर्न को मैं चूहा दौड़ कहता हूँ।"

"क्या कोई दूसरा रास्ता भी है?" माइक ने पूछा।

"हाँ," अमीर डैडी ने धीमे से कहा। "परंतु इसे बहुत कम लोग खोज पाते हैं।"

"और वह रास्ता क्या है?" माइक ने पूछा।

"उसी रास्ते को तुम लोग काम करते हुए और मेरे साथ सीखते हुए खोज लोगे, मैं यही उम्मीद करता हूँ। इसी कारण मैंने तुम्हें पैसे देना बंद कर दिया है।"

"इस बारे में कोई संकेत तो दीजिए।" माइक ने कहा। "हम लोग मेहनत से काम करते-करते थक चुके हैं, ख़ासकर तब जब इसके बदले में हमें कुछ नहीं मिल रहा है।"

"पहला क़दम तो यह कि तुम लोग सच बोलो," अमीर डैडी ने कहा।

"हम लोग झूठ नहीं बोल रहे हैं," मैंने कहा।

"मैंने कब कहा कि तुम लोग झूठ बोल रहे हो? मैं तो यह कह रहा हूँ कि सच्ची बात कह देनी चाहिए," अमीर डैडी ने जवाब दिया।

"किस बारे में?" मैंने पूछा।

"इस बारे में कि तुम लोगों को कैसा लग रहा है," अमीर डैडी ने कहा। "तुम्हें यह किसी और से कहने की ज़रूरत नहीं है। सिर्फ़ अपने आप से सच बोलो।"

"आपके कहने का मतलब यह है कि इस पार्क में मौजूद लोग, आपके लिए काम करने वाले लोग, मिसेज़ मार्टिन, यह सब लोग ऐसा नहीं करते।"

"मुझे ऐसा ही लगता है," अमीर डैडी ने कहा। "इसके बजाय, उन्हें हमेशा पैसा नहीं होने का डर सताता रहता है। उस डर का सामना करने के बजाय, सोचने के बजाय ये लोग सिर्फ़ प्रतिक्रिया करते रहते हैं। इस दौरान

Scanned by CamScanner

वे दिल से काम लेते हैं, दिमाग़ से नहीं।" अमीर डैडी ने अपने सिर पर उँगली ठोकते हुए कहा। "फिर, उनके हाथ में कुछ पैसे आ जाते हैं और उनमें ख़ुशी, इच्छा और लालच की भावनाएँ जाग जाती हैं। और एक बार फिर वे दिमाग़ से सोचने के बजाय दिल से काम करने लगते हैं।"

"तो वे दिल से, यानी अपनी भावनाओं से सोचते हैं," माइक ने कहा।

"बिलकुल ठीक," अमीर डैडी ने कहा। "वे इस बारे में सच नहीं बताते कि उन्हें कैसा लग रहा है। वे अपनी भावना से काम करते हैं और दिमाग़ से सोचने का कष्ट नहीं उठाते। उन्हें डर लगता है, वे नौकरी करने जाते हैं और आशा करते हैं कि ज़्यादा पैसे आने से उनका डर दूर हो जाएगा। परंतु ऐसा नहीं होता है। वही पुराना डर उन्हें फिर से सताने लगता है। वे फिर से नौकरी करने जाते हैं और फिर आशा करते हैं कि पैसा उनके डर को कम कर देगा परंतु ऐसा नहीं होता। डर के ही कारण वे नौकरी के जाल में फँसे रहते हैं, पैसा कमाते हैं, काम करते हैं, पैसा कमाते हैं और आशा करते हैं कि डर से उनका पीछा छूट जाएगा। परंतु हर रोज़ जब वे उठते हैं, तो उनका पुराना डर भी उनके साथ उठता है। वही पुराना डर करोड़ों लोगों को रात भर जगाता है और उनकी रात बहुत चिंता और परेशानी में गुज़रती है। इसलिए वे उठते हैं, काम पर जाते हैं और यह आशा करते हैं कि तनख़्वाह के चेक से उनके दिल को कुतरने वाले इस डर को वे मौत के घाट उतार देंगे। सच बात तो यह है कि पैसा उनकी ज़िंदगी को चला रहा है परंतु वे इस बारे में कभी सच नहीं बोलते हैं। पैसे ने उनकी भावनाओं पर क़ब्ज़ा कर लिया है और उनकी आत्माओं पर भी।"

यह कहकर अमीर डैडी ख़ामोश हो गए ताकि उनके शब्दों में छुपा संदेश हमारे अंदर चला जाए। माइक और मैंने उनकी बातें सुनी थीं, परंतु हम उनका मतलब पूरी तरह नहीं समझ पाए थे। मुझे अक्सर यह हैरानी होती थी कि लोगों को ऑफ़िस जाने की इतनी जल्दी क्यों होती है। उन्हें अपनी नौकरी में ख़ास मज़ा नहीं आता था और वे कभी ख़ुश भी नहीं दिखते थे। फिर क्या वजह थी जो उन्हें जल्दी ऑफ़िस जाने के लिए प्रेरित करती थी।

जब अमीर डैडी ने देख लिया कि हम जितना समझ सकते थे, हमने उतना समझ लिया है तो उन्होंने आगे कहा, "मैं यह चाहता हूँ कि तुम लोग इस जाल से बचो। दरअसल मैं तुम्हें यही सिखाना चाहता हूँ। मेरा मक़सद तुम्हें सिर्फ़ अमीर बनना सिखाना नहीं है, क्योंकि अमीर बनने से समस्या नहीं सुलझेगी।"

"अमीर बनने से समस्या नहीं सुलझेगी?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"बिलकुल नहीं। मुझे दूसरी भावना, इच्छा के बारे में अपनी बात पूरी करने दो। कुछ लोग इसे लालच कहते हैं, परंतु मैं इसे इच्छा कहना ज़्यादा

Scanned by CamScanner

पसंद करता हूँ। यह बुरा नहीं है कि हम किसी बेहतर, ज़्यादा सुंदर, ज़्यादा सुखद या रोमांचक चीज़ की इच्छा रखें। लोग इच्छा की वजह से भी पैसे के लिए काम करते हैं। उन्हें सुख के लिए भी पैसे की ज़रूरत होती है क्योंकि वे मानते हैं कि पैसे से सुख ख़रीदा जा सकता है। परंतु पैसा जो ख़ुशी देता है वह अक्सर पल भर की होती है। उन्हें ज़्यादा ख़ुशी, ज़्यादा आनंद, ज़्यादा आराम, ज़्यादा सुरक्षा हासिल करने के लिए और ज़्यादा पैसे की ज़रूरत होती है। इसलिए वे काम करते रहते हैं, और यह सोचते रहते हैं कि पैसा डर और लालच से परेशान उनकी आत्माओं को शांत कर देगा। परंतु पैसा यह काम नहीं कर सकता।"

"अमीर होने के बाद भी नहीं?" माइक ने पूछा।

"हाँ, अमीर होने के बाद भी नहीं," अमीर डैडी ने कहा। "दरअसल, बहुत से अमीर लोग इच्छा के कारण नहीं, बल्कि डर के कारण अमीर होते हैं। वे सचमुच सोचते हैं कि दौलत हो तो पैसे न होने का डर, ग़रीब होने का डर ख़त्म हो जाता है इसलिए वे ढेर सारी दौलत जमा कर लेते हैं और तब जाकर उन्हें पता चलता है कि उनका डर और बढ़ गया है। उन्हें अब इसके खोने की चिंता सताने लगती है। मैं ऐसे दोस्तों को जानता हूँ जो बहुत सा पैसा होने के बाद भी काम में जुटे रहते हैं। मैं ऐसे लोगों को भी जानता हूँ जिनके पास आज करोड़ों की दौलत है परंतु वे आज उससे भी ज़्यादा चिंतित और परेशान हैं जितने वे अपनी ग़रीबी के दिनों में थे। उन्हें इस बात का डर है कि वे अपनी सारी दौलत खो देंगे। अमीर बनने से पहले जो डर उन्हें सता रहे थे, वे अमीर बनने के बाद और भी बढ़ गए हैं। दरअसल उनकी आत्मा का कमज़ोर और ज़रूरतमंद हिस्सा अब और तेज़ी से चीख़ रहा है। वे अपने आलीशान बंगलों, शानदार कारों और उस ऐशोआराम की ज़िंदगी को नहीं खोना चाहते, जो पैसे से ख़रीदी गई है। वे इसी चिंता में घुलते रहते हैं कि अगर वे कंगाल हो गए, तो उनके दोस्त क्या कहेंगे। इसी चिंता की वजह से कई लोग तो न्यूरोटिक और कुंठित हो चुके हैं, हालाँकि वे अमीर दिखते हैं और उनके पास पहले से ज़्यादा पैसा है।"

"तो क्या ग़रीब आदमी ज़्यादा सुखी होता है?" मैंने पूछा।

"नहीं, मेरे हिसाब से तो ऐसा नहीं होता," अमीर डैडी ने जवाब दिया। "पैसे से दूर रहना भी उतना ही बड़ा पागलपन है जितना कि उसके पीछे भागना।"

उसी समय क़स्बे का एक पागल हमारी मेज़ के पास से गुज़रा और कूड़ेदान के पास रुककर उसमें कुछ ढूँढ़ने लगा, जैसे उसे किसी ने समझाकर भेजा हो। चर्चा के इस मोड़ पर हम तीनों उसकी हरकतों को दिलचस्पी के साथ देख रहे थे, जबकि इससे पहले हमने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया होता।

Scanned by CamScanner

अमीर डैडी ने अपने पर्स में से एक डॉलर निकाला और उस पागल बूढ़े को पास आने का इशारा किया। पैसा देखते ही वह तत्काल चला आया, उसने पैसे लिए और अमीर डैडी को ढेर सी दुआएँ दीं और अपनी अच्छी क़िस्मत पर ख़ुश होकर वह जल्दी से चला गया।

"इसमें और मेरे ज़्यादातर कर्मचारियों में बहुत अंतर नहीं है," अमीर डैडी ने कहा। "मैं ऐसे बहुत से लोगों से मिला हूँ जो कहते हैं, 'अरे, मुझे पैसों में कोई रुचि नहीं है।' फिर भी वे हर रोज़ आठ घंटे की नौकरी पर जाते हैं। यह तो सच्चाई को नकारना है। अगर उन्हें पैसे में रुचि नहीं है, तो वे नौकरी पर क्यों जाते हैं? इस तरह का चिंतन पागलपन का चिंतन है। उस कंजूसी भरे चिंतन से भी ज़्यादा पागलपन का, जिसमें कोई आदमी पैसे पर कुंडली मारकर बैठ जाता है।"

जब मैं वहाँ अपने अमीर डैडी की बात सुन रहा था तब मेरे दिमाग़ में यह ख़्याल आ रहा था कि मेरे ग़रीब डैडी हज़ार बार यह कह चुके थे, "मुझे पैसे में कोई रुचि नहीं है।" वे ऐसा अक्सर कहा करते थे। वे ख़ुद की असली भावनाओं को छुपाने के लिए हमेशा यह भी कहा करते थे, "मैं इसलिए काम करता हूँ क्योंकि मुझे अपना काम बहुत पसंद है।"

"तो हमें क्या करना चाहिए?" मैंने पूछा। "यही कि हम पैसे के लिए काम नहीं करें, जब तक कि हमारे मन से डर और लालच की भावनाएँ पूरी तरह से न निकल जाएँ?"

"नहीं, उसमें तो बहुत समय बर्बाद हो जाएगा," अमीर डैडी ने कहा। "भावनाओं के कारण ही तो हम इंसान हैं। इन्हीं के कारण हमारी हस्ती है। 'भावना' शब्द का मतलब है चलायमान ऊर्जा। अपनी भावनाओं के बारे में ईमानदार रहो और अपने दिमाग़ और भावनाओं का इस्तेमाल अपने समर्थन में करो, न कि अपने विरोध में।"

"आहा!" माइक ने कहा।

"अगर तुम्हें मेरी बात समझ में नहीं आई हो, तो इस बारे में चिंता मत करो। आगे आने वाले सालों में तुम्हें इसका मतलब समझ में आएगा। अपनी भावनाओं पर प्रतिक्रिया करने के बजाय उनका विश्लेषण करने की कोशिश करो। ज़्यादातर लोग यह नहीं जानते कि वे अपने दिमाग़ से सोचने के बजाय अपने दिल की भावनाओं से सोचते हैं। आपकी भावनाएँ तो आपकी रहेंगी ही, परंतु आपको अपने दिमाग़ से सोचना भी आना चाहिए, क्योंकि दिमाग़ को सोचने के लिए ही बनाया गया है।"

"क्या आप मुझे इसका कोई उदाहरण दे सकते हैं?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं?" अमीर डैडी ने जवाब दिया। "जब कोई आदमी कहता है,

Scanned by CamScanner

'मुझे नौकरी खोजने की ज़रूरत है,' तो इस बात की बहुत संभावना है कि उसकी भावनाएँ फ़ैसला कर रही हैं। इस विचार का असली कारण है पैसा न होने का डर।"

"परंतु अपनी ज़िंदगी चलाने के लिए लोगों को पैसे की ज़रूरत तो पड़ती ही है," मैंने कहा।

"बिलकुल पड़ती है," अमीर डैडी मुस्कराए। "मैं सिर्फ़ यह कह रहा हूँ कि उनके डर के कारण उनके मन में यह विचार आता है।"

"मैं समझ नहीं पाया," माइक ने कहा।

अमीर डैडी ने कहा, "अगर आपके मन में पैसे की कमी का डर जाग जाए तो तत्काल नौकरी ढूँढ़ने के लिए दौड़ मत लगाइए ताकि कुछ रुपयों के सहारे उस डर को मार दिया जाए। इसके बजाय आप ख़ुद से यह सवाल पूछिए। 'क्या लंबे समय में इस डर का सबसे बढ़िया इलाज नौकरी है?' मेरे ख़्याल से इसका जवाब 'नहीं' होता है। ख़ासकर जब आप किसी आदमी की पूरी ज़िंदगी को देखते हैं। नौकरी दीर्घकालीन समस्या का अल्पकालीन समाधान है।"

"परंतु मेरे डैडी हमेशा कहा करते हैं, 'स्कूल में पढ़ो, अच्छे नंबर लाओ, ताकि तुम्हें एक सुरक्षित और अच्छी नौकरी मिल सके।'" मैंने हड़बड़ी में बोल ही दिया।

"हाँ, मैं समझ सकता हूँ कि वे ऐसा क्यों कहते हैं," अमीर डैडी ने मुस्कराकर कहा। "ज़्यादातर लोग ऐसी ही सलाह देते हैं और ज़्यादातर लोगों के लिए यह एक अच्छा विचार होता है। परंतु लोगों की इस सलाह के पीछे भी डर छुपा होता है।"

"आपका यह मतलब है कि मेरे डैडी ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि वे डरे हुए हैं?"

"हाँ," अमीर डैडी ने कहा। "वे घबराए हुए हैं कि शायद तुम पैसा नहीं कमा पाओगे और समाज में फ़िट नहीं हो पाओगे। मुझे ग़लत मत समझना। वे तुम्हें प्यार करते हैं और तुम्हारा भला चाहते हैं। और मैं सोचता हूँ कि उनका डर सही भी है। शिक्षा और नौकरी महत्वपूर्ण हैं। परंतु इससे डर का इलाज नहीं होगा। वही डर जो उन्हें सुबह उठकर कुछ रुपए कमाने के लिए प्रेरित करता है, उसी डर के कारण वे तुम्हारे स्कूल जाने पर इतना ज़ोर देते हैं।"

"तो आपकी सलाह क्या है?" मैंने पूछा।

"मैं चाहता हूँ कि तुम्हें पैसे की ताक़त पर क़ाबू पाना सिखाऊँ। पैसे का डर तुम्हारे दिमाग़ से निकल जाना चाहिए। और यह स्कूल में नहीं सिखाया जाता। अगर तुम इसे नहीं सीखोगे, तो तुम पैसे के ग़ुलाम बन जाओगे।"

Scanned by CamScanner

अब उनकी बातें मेरी समझ में आ रही थीं। वे हमारे विचारों को ज़्यादा व्यापक बनाना चाहते थे। वे चाहते थे कि जो मिसेज़ मार्टिन नहीं देख सकती थीं, उनके कर्मचारी नहीं देख सकते थे, या मेरे डैडी तक नहीं देख सकते थे, वह देखने की योग्यता हममें आ जाए। उन्होंने जो उदाहरण दिए थे वे उस समय कठोर ज़रूर लग रहे थे, लेकिन मैं उन्हें कभी नहीं भूला। मेरा नज़रिया उस दिन बहुत बड़ा हो गया था। अब मैं उस जाल को देख सकता था, जो ज़्यादातर लोगों के सामने बिछा होता है।

"देखो, आख़िरकार हम सभी लोग कर्मचारी हैं। हम केवल अलग-अलग स्तरों पर काम करते हैं," अमीर डैडी ने कहा। "मैं तुम लोगों से बस यही चाहता हूँ कि तुम लोग इस जाल से बचे रहो। डर और लालच, इन दो फंदों से बनने वाले जाल से। इनका इस्तेमाल अपने समर्थन में करो, अपने विरोध में नहीं। मैं तुम लोगों को यही सिखाना चाहता हूँ। मैं तुम लोगों को यह नहीं सिखाना चाहता कि ढेर सारा पैसा कैसे इकट्ठा कर लिया जाए। उससे डर या लालच को नहीं जीता जा सकता। अगर तुम्हें डर और लालच पर क़ाबू पाना नहीं आता, तो तुम चाहे कितने भी अमीर बन जाओ, असलियत में तुम एक बड़ी तनख़्वाह पाने वाले ग़ुलाम ही रहोगे।"

"तो हम किस तरह इस जाल से बच सकते हैं?" मैंने पूछा।

"ग़रीबी या पैसे की तंगी का ख़ास कारण डर और अज्ञान होता है, न कि अर्थव्यवस्था या सरकार या अमीर लोग। यह ख़ुद का ओढ़ा हुआ डर या अज्ञान होता है जो लोगों को इस जाल में फँसाए रखता है। इसलिए तुम बच्चों को स्कूल जाना चाहिए और अपने कॉलेज की पढ़ाई पूरी करनी चाहिए। मैं तुम लोगों को यह ज़रूर सिखाऊँगा कि इस जाल से कैसे बचा जा सकता है।"

पहेली के टुकड़े अब सामने आ चुके थे। मेरे पढ़े-लिखे डैडी के पास बड़ी डिग्रियाँ थीं और एक बढ़िया करियर भी था। परंतु स्कूल ने उन्हें यह कभी नहीं सिखाया कि धन या अपने डर को किस तरह से क़ाबू में रखा जाता है। अब मैं समझ चुका था कि मैं अपने दोनों डैडियों से अलग-अलग परंतु महत्वपूर्ण बातें सीख सकता हूँ।

"तो आप पैसा न होने के डर के बारे में बात कर रहे थे। पैसे की इच्छा किस तरह हमारी सोच पर असर डालती है?" माइक ने पूछा।

"तुम्हें तब कैसा महसूस हुआ था जब मैंने तुम्हारी तनख़्वाह बढ़ाने का लालच दिया था? क्या तुमने यह देखा था कि तुम्हारी इच्छाएँ किस तरह बढ़ रही थीं?"

हमने अपने सिर हिलाकर हामी भरी।

"पर तुमने अपनी भावनाओं के सामने हार नहीं मानी और इस कारण

Scanned by CamScanner

तुम लोगों ने जल्दबाज़ी में काम नहीं लिया। इससे तुम्हें सोचने का वक़्त मिल गया। यह सबसे महत्वपूर्ण है। हममें हमेशा डर और लालच की भावनाएँ रहेंगी। इसी क्षण से, तुम लोगों के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है कि तुम इन भावनाओं का इस्तेमाल अपने समर्थन में करो और लंबे समय तक ऐसा करो। अपनी भावनाओं को अपने दिमाग़ पर हावी मत होने दो और इस तरह अपने विचारों को दूषित मत होने दो। ज़्यादातर लोग डर और लालच का इस्तेमाल ख़ुद के विरोध में करते हैं। यह अज्ञान की शुरुआत होती है। डर और इच्छा की भावनाओं के कारण ही ज़्यादातर लोग तनख़्वाह के चेक, तनख़्वाह में बढ़ोतरी और नौकरी की सुरक्षा के पीछे भागते-भागते अपनी पूरी ज़िंदगी निकाल देते हैं। असल में वे यह सोचते ही नहीं हैं कि भावनाओं के आधार पर बने हुए ये विचार उन्हें किस तरफ़ ले जा रहे हैं। यह तो वही बात हो गई जिसमें गाड़ी खींचने वाले गधे के सामने उसका मालिक गाजर लटकाए रखता है जो उसकी नाक के ठीक सामने होती है। गधे का मालिक जहाँ जाना चाहता है, वहाँ जाता है परंतु गधा तो लालच के कारण भाग रहा है। कुल गधे के लिए दूसरी गाजर आ जाएगी, और गधा उसका पीछा करने लगेगा।"

"आपके कहने का मतलब यह है कि जिस समय मैंने नए बेसबॉल ग्लव्ज़, कैंडी और खिलौनों के सपने देखना शुरू किया, उस समय मेरी हालत उस गधे की तरह हो गई थी जो गाजर के पीछे भागता है?" माइक ने पूछा।

"हाँ। और उम्र के साथ-साथ तुम्हारे खिलौने भी ज़्यादा महँगे होते जाएँगे। अपने दोस्तों पर रौब झाड़ने के लिए एक नई कार, एक नाव और एक आलीशान घर," अमीर डैडी ने मुस्कराकर कहा। "डर आपको दरवाज़े से बाहर धक्का देता है, इच्छा आपको अंदर बुलाती है। आपको चट्टानों की तरफ़ ललचाती है। यही जाल है।"

"तो इसकी काट क्या है?" माइक ने पूछा।

"डर और इच्छा अज्ञान की वजह से बढ़ते हैं। इसलिए अमीर लोगों के पास जितना ज़्यादा पैसा होता है, उनका डर भी उतना ही ज़्यादा बड़ा होता है। धन ही गाजर है, भ्रम है। अगर गधा पूरी तस्वीर देख सकता तो शायद वह गाजर का पीछा करने के अपने फ़ैसले पर दुबारा सोचता।"

अमीर डैडी ने आगे यह समझाया कि आदमी की ज़िंदगी अज्ञान और ज्ञान के बीच होने वाला संघर्ष है। उन्होंने बताया कि एक बार कोई आदमी ख़ुद के बारे में ज्ञान की खोज करना बंद कर देता है, तो उसकी ज़िंदगी में अज्ञान घुस जाता है। यह संघर्ष हर पल होता है। इसीलिए हमें यह फ़ैसला करना है- यह सीखना है कि अपने दिमाग़ को खुला रखा जाए या इसे बंद कर लिया जाए।

"देखो, स्कूल बहुत ज़्यादा महत्वपूर्ण है। आप स्कूल इसलिए जाते हैं ताकि

Scanned by CamScanner

आप वहाँ कोई कला या व्यवसाय सीख सकें और इस तरह से आप समाज में योगदान दे सकें। हर समाज में शिक्षकों, डॉक्टरों, मैकेनिकों, कलाकारों, रसोइयों, व्यावसायिक लोगों, पुलिस अफ़सरों, दमकलकर्मियों और सिपाहियों की ज़रूरत होती है। स्कूल उन्हें यह सब सिखाते हैं ताकि हमारा समाज विकसित हो सके और हमारी संस्कृति समृद्ध हो सके," अमीर डैडी ने कहा। "दुर्भाग्य से, कई लोगों के लिए स्कूल शिक्षा का अंत होता है, शुरुआत नहीं।"

एक लंबी ख़ामोशी छाई रही। अमीर डैडी मुस्करा रहे थे। उस दिन उन्होंने जो कहा था, वह मैं पूरी तरह से नहीं समझ पाया था। परंतु ज़्यादातर महान शिक्षकों के शब्द सालों तक हमें सिखाते रहते हैं। उनके शब्द इसी तरह से आज भी मेरे साथ हैं।

"मैं आज थोड़ा निर्मम हुआ," अमीर डैडी ने कहा। "एक वजह से निर्मम हुआ। मैं चाहता था कि तुम लोगों को आज की यह चर्चा हमेशा याद रहे। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग हमेशा मिसेज़ मार्टिन के बारे में सोचो। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग हमेशा उस गधे के बारे में सोचो। इन्हें कभी मत भूलना। अगर तुमने अपनी समझदारी से उन्हें क़ाबू में नहीं किया तो डर और लालच की तुम्हारी दोनों भावनाएँ तुम्हें ज़िंदगी के सबसे बड़े जाल में फँसा सकती हैं। अपनी ज़िंदगी को डरते-डरते गुज़ारना, अपने सपनों को पूरा न करना निर्ममता है। यह भी निर्ममता है कि पैसे के लिए कड़ी मेहनत की जाए और यह सोचा जाए कि पैसे से ख़रीदी गई चीज़ें सुख दे सकती हैं। बिल चुकाने के डर से घबराकर आधी रात को जागना जीने का एक भयानक तरीक़ा है। तनख़्वाह के हिसाब से ज़िंदगी जीना भी कोई जीना है। यह सोचना कि कोई नौकरी आपको सुरक्षा का एहसास दे सकती है ख़ुद से झूठ बोलना है। यह निर्ममता है और यही वह जाल है जिससे मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ। मैंने देखा है कि पैसा किस तरह से लोगों की ज़िंदगियों को चलाता है। ऐसा अपने साथ मत होने देना। भगवान के लिए पैसे को अपनी ज़िंदगी मत चलाने देना।"

हमारी मेज़ के नीचे सॉफ़्टबॉल आ गई। अमीर डैडी ने उसे उठाया और वापस खिलाड़ियों के पास फेंक दिया।

"तो अज्ञान का लालच और डर से क्या ताल्लुक़ है?" मैंने पूछा।

"यह पैसे का अज्ञान ही है जिसकी वजह से इतना लालच और इतना डर पैदा होता है," अमीर डैडी ने कहा। "मैं तुम्हें कुछ उदाहरण देता हूँ। एक डॉक्टर जो अपने परिवार को ज़्यादा ख़ुशी देना चाहता है, अपनी फ़ीस बढ़ा देता है। उसकी फ़ीस बढ़ने की वजह से स्वास्थ्य सुविधाएँ हर एक के लिए महँगी हो जाती हैं। अब इससे ग़रीब लोगों को सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुँचता है, इसलिए ग़रीब लोगों का स्वास्थ्य अमीर लोगों से ज़्यादा बुरा होगा।

"अब चूँकि डॉक्टरों ने अपनी फ़ीस बढ़ा दी है, इसलिए वकील भी अपनी

Scanned by CamScanner

फ़ीस बढ़ा देते हैं। चूँकि वकीलों ने अपनी फ़ीस बढ़ा दी है, इसलिए स्कूल के टीचर भी अपनी तनख़्वाह बढ़वाना चाहते हैं, जिसके कारण हमारा टैक्स बढ़ता है और यह सिलसिला अनंत काल तक यूँ ही चलता रहता है। जल्द ही, अमीर और ग़रीब लोगों के बीच इतना भयानक अंतर हो जाएगा कि प्रलय आ जाएगी और एक और महान सभ्यता धराशायी हो जाएगी। महान सभ्यताएँ तभी धराशायी हुई हैं जब अमीरों और ग़रीबों के बीच का फ़ासला बहुत ज़्यादा हो गया है। अमेरिका भी उसी रास्ते पर चल रहा है, और इससे यह साबित होता है कि इतिहास अपने आपको दोहराता है क्योंकि हम इतिहास से कुछ नहीं सीखते हैं। हम केवल ऐतिहासिक तारीख़ें और नाम रटते हैं, उनके सबक़ को भूल जाते हैं।"

"क्या क़ीमतें नहीं बढ़नी चाहिए?" मैंने पूछा।

"अच्छी तरह से चल रही सरकार और एक शिक्षित समाज में तो नहीं। क़ीमतें दरअसल कम होनी चाहिए। ज़ाहिर है कि ऐसा केवल सिद्धांत में ही हो सकता है। क़ीमतें अज्ञान से पैदा हुए लालच और डर के कारण बढ़ती हैं। अगर स्कूलों में धन के बारे में सिखाया जाता तो लोगों के पास ज़्यादा पैसा होता और बाज़ार की क़ीमतें भी कम होतीं, परंतु स्कूलों में सिर्फ़ पैसे के लिए काम करना सिखाया जाता है, पैसे की ताक़त का इस्तेमाल नहीं सिखाया जाता।"

"परंतु हमारे यहाँ बिज़नेस स्कूल भी हैं?" माइक ने पूछा। "क्या आप मुझे अपनी मास्टर्स डिग्री के लिए बिज़नेस स्कूल जाने के लिए प्रेरित नहीं कर रहे हैं?"

"हाँ," अमीर डैडी ने कहा। "परंतु अक्सर ऐसा होता है कि बिज़नेस स्कूल ऐसे कर्मचारियों को प्रशिक्षित करते हैं जो परिष्कृत बीन काउंटर्स होते हैं। ईश्वर ही मालिक है जब कोई बीन काउंटर बिज़नेस सँभाल ले। वे सिर्फ़ संख्या को देखते हैं, लोगों को निकालते हैं और बिज़नेस का गला घोंट देते हैं। मैं जानता हूँ क्योंकि मैं बीन काउंटर्स से काम लेता हूँ। वे सिर्फ़ इतना ही सोचते हैं कि लागत कैसे कम की जाए और क़ीमत कैसे बढ़ाई जाए, जिससे बहुत सी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। बीन काउंटिंग भी महत्वपूर्ण है। मैं सोचता हूँ कि ज़्यादा लोगों को इस बारे में जानना चाहिए, परंतु यह भी पूरी तस्वीर नहीं बताती।" अमीर डैडी ने ग़ुस्से से कहा।

"तो फिर क्या इसका कोई हल है?" माइक ने पूछा।

"हाँ," अमीर डैडी ने कहा। "सोचने के लिए अपनी भावनाओं का इस्तेमाल करना सीखो, अपनी भावनाओं के बहाव में आकर मत सोचो। जब तुम लोग मुफ़्त में काम करने के लिए तैयार हो गए थे तो तुमने अपनी भावनाओं को क़ाबू में रखना सीख लिया था। तभी मैं समझ गया था कि तुमसे उम्मीद की जा सकती है। जब मैंने तुम्हें ज़्यादा तनख़्वाह का लालच दिया तब

Scanned by CamScanner

तुमने एक बार फिर भावनाओं की बात नहीं मानी। तुम ताक़तवर भावनाओं के बावजूद सोचना सीख रहे थे। यह पहला क़दम था।"

"यह क़दम इतना महत्वपूर्ण क्यों है?" मैंने पूछा।

"यह तुम अपने आप जान जाओगे। अगर तुम सीखना ही चाहते हो, तो मैं तुम लोगों को ब्रायर पैच में ले जाऊँगा। यह वह जगह है जिससे लोग बचते हैं। मैं तुम्हें उस जगह पर ले जाऊँगा जहाँ जाने में ज़्यादातर लोगों को डर लगता है। अगर तुम मेरे साथ जाओगे, तो तुम्हारे मन से पैसे के लिए काम करने का विचार निकल जाएगा। इसके बजाय तुम यह सीखोगे कि पैसे से कैसे काम लिया जा सकता है।"

"और अगर हम आपके साथ जाते हैं तो हमें क्या मिलेगा? अगर हम आपसे सीखने के लिए तैयार होते हैं तो हमें क्या मिलेगा?" मैंने पूछा।

"वही जो ब्रायर रैबिट को मिला था," अमीर डैडी ने कहा। "टार बेबी से आज़ादी।"

"क्या ऐसा कोई ब्रायर पैच होता है?" मैंने पूछा।

"हाँ," अमीर डैडी ने कहा। "डर और लालच ही ब्रायर पैच हैं। अपने डर से पीछा छुड़ाकर, अपने लालच का सामना करके, अपनी कमज़ोरियों और ज़रूरतों को पहचानकर ही हम बाहर निकलने के रास्ते तक पहुँच सकते हैं। और बाहर निकलने का रास्ता हमारे दिमाग़ से होकर गुज़रता है, सही विचारों को चुनने से।"

"विचारों को चुनने से?" माइक ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"हाँ, इस विचार को चुनकर कि हम क्या सोचेंगे, बजाय इसके कि हम अपनी भावनाओं में बहकर लगातार प्रतिक्रिया करते रहें। सुबह उठने और काम पर जाने से ही आपकी समस्याएँ नहीं सुलझ जातीं, क्योंकि बिल चुकाने के लिए पर्याप्त पैसा न होने का डर आपको सताता रहेगा। सोचने से आपको ख़ुद से एक सवाल पूछने का समय मिलता है। इस तरह का सवाल, 'क्या इस समस्या का सबसे बढ़िया समाधान इस पर और ज़्यादा मेहनत करना है?' ज़्यादातर लोग इतनी बुरी तरह घबराए होते हैं कि वे ख़ुद अपने आपको असली बात नहीं बताते - कि डर हावी हो रहा है - और नतीजा यह निकलता है कि वे सोच ही नहीं पाते और इसके बजाय दरवाज़े से बाहर दौड़ लगा देते हैं। टार बेबी हावी हो जाती है। अपने विचार चुनने से मेरा यही मतलब था।"

"पर हम ऐसा किस तरह करेंगे?" माइक ने पूछा।

"यही तो मैं तुम्हें सिखाने वाला हूँ। मैं तुम्हें यह सिखाऊँगा कि तुम्हारे

Scanned by CamScanner

पास चुनने के लिए विचारों के विकल्प होने चाहिए, ताकि तुम हड़बड़ी में काम करने से बच सको, जैसे अपनी सुबह की कॉफ़ी पीकर दरवाज़े से बाहर दौड़ लगाने की आदत से।

"मैंने तुमसे जो पहले कहा था उसे याद रखो : नौकरी दीर्घकालीन समस्या का अल्पकालीन समाधान है। ज़्यादातर लोगों के दिमाग़ में सिर्फ़ एक समस्या होती है और यह थोड़े समय की होती है। यह समस्या होती है : महीने के आख़िर में चुकाए जाने वाले बिल यानी टार बेबी। अब पैसा उनकी ज़िंदगी चलाता है। या मैं यह कहूँ कि पैसे को लेकर उनका डर और अज्ञान उनकी ज़िंदगी चलाते हैं। तो वे वही करते हैं जो उनके माँ-बाप ने किया था, सुबह उठो और पैसे के लिए काम करो। वे इतना समय भी नहीं निकाल पाते कि यह सोच सकें, 'क्या कोई दूसरा तरीक़ा है?' इस वक़्त वे दिल से सोचते हैं, दिमाग़ से नहीं।"

"दिल से सोचने और दिमाग़ से सोचने में क्या फ़र्क़ होता है?" माइक ने पूछा।

अमीर डैडी ने जवाब दिया। "मैं इस तरह के जुमले अक्सर सुनता हूँ, 'हर आदमी को काम करना पड़ता है।' या 'अमीर लोग शोषक होते हैं।' या 'मैं दूसरी नौकरी ढूँढ़ लूँगा। मेरी तनख़्वाह बढ़नी चाहिए। आप इस तरह मेरा शोषण नहीं कर सकते।' या 'मैं इस नौकरी को इसलिए पसंद करता हूँ क्योंकि यह सुरक्षित है।' इसके बजाय हमें यह कहना चाहिए, 'क्या यहाँ ऐसा कुछ है जो मुझे नहीं मिल रहा है?' इस तरह भावना पर आधारित हमारे विचारों की ज़ंजीर टूट जाएगी और हमें ज़्यादा अच्छे तरीक़े से सोचने का मौक़ा मिल जाएगा।"

मुझे मानना ही पड़ेगा, कि मेरे लिए यह सबक़ एक महान सबक़ साबित हुआ। यह जानना कि कब कोई आदमी दिल से बोल रहा है और कब दिमाग़ से, किसके शब्दों में भावनाएँ छुपी हुई हैं और किसके शब्दों में विचार - यह एक ऐसा सबक़ था जो ज़िंदगी भर मेरे काम आया। ख़ास तौर पर तब जब मैं अपने दिल से यानी अपनी भावनाओं से बोल रहा था, न कि अपने विचारों या दिमाग़ से।

जब हम स्टोर की तरफ़ वापस मुड़े तो अमीर डैडी ने यह कहा कि अमीर लोग हक़ीक़त में 'पैसा बनाते' हैं। वे इसके लिए काम नहीं करते। उन्होंने यह भी बताया कि 5 सेंट के सीसे के सिक्के ढालते समय जब माइक और मैं यह सोच रहे थे कि हम पैसे बना रहे थे, तो हमारे विचार उसी रास्ते पर चल रहे थे जिस पर अमीर लोग चलते हैं। दिक़्क़त सिर्फ़ इतनी थी कि हमारे लिए ऐसा करना ग़ैरक़ानूनी था। सरकार और बैंकों के लिए ऐसा करना क़ानूनी था, परंतु हमारे लिए नहीं था। उन्होंने यह भी बताया कि पैसा क़ानूनी और

Scanned by CamScanner

ग़ैरक़ानूनी दोनों ही तरीक़ों से कमाया जा सकता है।

अमीर डैडी ने बाद में हमें यह समझाया कि अमीर लोग जानते हैं कि धन एक भ्रम है, जो हक़ीक़त में गधे के सामने लटकी गाजर की तरह होता है। धन के भ्रम के कारण जो डर और लालच पैदा होता है, उसकी वजह से ही अरबों-खरबों लोग यह सोचते रहते हैं कि धन असली चीज़ है। धन दरअसल एक मायाजाल है। जनता के अज्ञान और भरोसे के भ्रम की वजह से ही ताश के पत्तों का यह महल खड़ा रह पाता है। "सच कहा जाए तो गधे की गाजर धन से ज़्यादा क़ीमती है," उन्होंने कहा।

उन्होंने अमेरिका के गोल्ड स्टैंडर्ड के बारे में भी बात की और यह बताया कि हर डॉलर का नोट असल में चाँदी का प्रमाणपत्र है। उन्हें इस अफ़वाह से चिंता हो रही थी कि किसी दिन हम लोग गोल्ड स्टैंडर्ड को छोड़ देंगे और हमारे डॉलर चाँदी के प्रमाणपत्र नहीं रहेंगे।

"जब ऐसा होगा, बच्चों, तो कयामत आ जाएगी। ग़रीब, मध्य वर्गीय और नासमझ लोगों की ज़िंदगी सिर्फ़ इसलिए बर्बाद हो जाएगी क्योंकि वे यह भरोसा करते रहेंगे कि धन ही असली चीज़ है और वे जिस कंपनी के लिए काम करते हैं वह कंपनी या सरकार उनका ध्यान रखेगी।"

उनकी बातें उस दिन हमारी समझ में नहीं आ रही थीं, परंतु सालों बाद जाकर मुझे यह समझ में आया कि यह बड़े पते की बात थी।

वह देखना जो दूसरे नहीं देख पाते

जब वे अपने पिकअप ट्रक में चढ़े तो उन्होंने कहा, "काम करते रहो, बच्चो, पर जितनी जल्दी तुम तनख़्वाह की ज़रूरत को भूल जाओगे, तुम्हारी आगे की ज़िंदगी उतनी ही आसान हो जाएगी। अपने दिमाग़ का इस्तेमाल करो, मुफ़्त में काम करो और जल्दी ही तुम्हारा दिमाग़ तुम्हें पैसे कमाने के दूसरे तरीक़े बता देगा। उन तरीक़ों से तुम इस नौकरी से ज़्यादा कमा लोगे। तुम ऐसी चीज़ें देख पाओगे जो दूसरे लोग कभी नहीं देख पाते। मौक़े उनकी नाक के नीचे होते हैं। फिर भी ज़्यादातर लोग इन मौक़ों को कभी नहीं देख पाते। इसका कारण यह है कि वे पैसे और सुरक्षा ढूँढ़ते रहते हैं, इसलिए उन्हें यही मिलते हैं। जिस वक़्त तुम एक मौक़ा भाँपने में कामयाब हो जाओगे, उसके बाद तुम ज़िंदगी भर मौक़ा भाँप सकते हो। जिस वक़्त तुम ऐसा कर लोगे, मैं तुम लोगों को कुछ और बातें सिखाऊँगा। इस बात को ध्यान से समझ लो ताकि तुम ज़िंदगी के सबसे बड़े जाल से बच सको। वह टार बेबी तुम्हें कभी नहीं छू पाएगी।"

माइक और मैंने स्टोर से अपनी चीज़ें उठाईं और मिसेज़ मार्टिन से

Scanned by CamScanner

गुडबाइ कहा। हम वापस पार्क गए, उसी पिकनिक बेंच पर बैठे और वहाँ घंटों तक सोचते रहे और बातें करते रहे।

हमने अगला हफ़्ता स्कूल में इसी बारे में सोचते और बातें करते हुए बिताया। दो सप्ताह तक हम लोग सोचते रहे, बातें करते रहे और मुफ़्त में काम करते रहे।

दूसरे शनिवार के आख़िर में मैं मिसेज़ मार्टिन से दुबारा गुडबाइ कर रहा था और कॉमिक-बुक स्टैंड को ललचाई नज़र से देख रहा था। हर शनिवार 30 सेंट न मिलने में सबसे दुखद बात यह थी कि मेरे पास कॉमिक्स ख़रीदने के लिए बिलकुल भी पैसे नहीं होते थे। अचानक, जब मिसेज़ मार्टिन मुझे और माइक को गुडबाइ कर रही थीं, मैंने उन्हें एक ऐसा काम करते देखा जो इसके पहले कभी नहीं देखा था। मेरा मतलब है, मैंने इसके पहले उन्हें ऐसा करते देखा तो था, पर उस पर ध्यान नहीं दिया था।

मिसेज़ मार्टिन ने कॉमिक्स के पहले पेज को आधा काटा और उसे सँभालकर अपने पास रख लिया। बाक़ी की पुस्तक को उन्होंने एक बड़े से भूरे कार्डबोर्ड के डिब्बे में डाल दिया। जब मैंने उनसे पूछा कि वे इन कॉमिक्स का क्या करती हैं, तो उन्होंने कहा, "मैं उन्हें फेंक देती हूँ। जब वह नई कॉमिक्स लाता है तो मैं ऊपर के आधे कवर को क्रेडिट के लिए कॉमिक बुक डिस्ट्रिब्यूटर को दे देती हूँ। वह एक घंटे में आने ही वाला है।"

माइक और मैंने एक घंटे तक इंतज़ार किया। जल्दी ही वह डिस्ट्रिब्यूटर आया और मैंने उससे पूछा कि क्या हमें कॉमिक्स मिल सकती हैं। इस पर उसने जवाब दिया, "आपको मिल सकती हैं अगर आप इस स्टोर में काम करते हैं और अगर आप यह वादा करें कि आप उन्हें दुबारा नहीं बेचेंगे।"

हमारी पार्टनरशिप एक बार फिर क़ायम हो गई थी। माइक की मम्मी ने बेसमेंट में हमें एक ख़ाली कमरा दे दिया, जो उनके किसी काम नहीं आता था। हमने उसकी सफ़ाई करके उसमें सैकड़ों कॉमिक्स जमा कर लीं। जल्दी ही हमारी कॉमिक्स लायब्रेरी लोगों के लिए खोल दी गई। माइक की छोटी बहन को पढ़ने का बहुत शौक़ था, इसलिए हमने उसे अपना लायब्रेरियन बना दिया। लायब्रेरी में आने और कॉमिक्स पढ़ने के लिए वह हर बच्चे से 10 सेंट लेती थी। स्कूल ख़त्म होने के बाद हर दोपहर 2:30 से 4:30 तक लायब्रेरी खुलती थी। पड़ोस के बहुत से बच्चे इसके ग्राहक बन गए थे और वे जितनी कॉमिक्स पढ़ना चाहते थे, दो घंटे में पढ़ सकते थे। यह उनके लिए बहुत बढ़िया सौदा था क्योंकि एक कॉमिक्स की क़ीमत 10 सेंट होती थी और दो घंटे में वे पाँच या छह कॉमिक्स पढ़ लेते थे।

माइक की बहन लौटते समय बच्चों की तलाशी लेती थी और यह देख लेती थी कि वे अपने कपड़ों में कॉमिक्स छुपाकर तो नहीं ले जा रहे हैं। वह

Scanned by CamScanner

इस बात का रिकॉर्ड भी रखती थी कि हर रोज़ कितने बच्चे आए, उनका नाम क्या था और उनके सुझाव क्या थे। माइक और मुझे तीन महीने तक हर हफ़्ते 9.5 डॉलर का औसत लाभ हुआ। हमने उसकी बहन को हर हफ़्ते 1 डॉलर का भुगतान किया और उसे मुफ़्त में कॉमिक्स पढ़ने का फ़ायदा भी दिया, हालाँकि वह कॉमिक्स कभी-कभार ही पढ़ती थी क्योंकि वह हमेशा अपनी पढ़ाई में लगी रहती थी।

माइक और मैं समझौते के मुताबिक़ हर शनिवार स्टोर में काम करते रहे। साथ ही, हम अलग-अलग दुकानों से कॉमिक्स इकट्ठी करते रहे। हमने वादे के मुताबिक़ कॉमिक्स नहीं बेचीं। जब कोई कॉमिक्स फट जाती थी तो हम उसे जला देते थे। हमने इसकी एक शाखा खोलने की भी कोशिश की, लेकिन हमें माइक की बहन की तरह मेहनती और भरोसेमंद लायब्रेरियन नहीं मिला।

बहुत कम उम्र में ही हमने यह जान लिया था कि अच्छे स्टाफ़ को खोजना कितना मुश्किल होता है।

लायब्रेरी खुलने के तीन महीने बाद, हमारी लायब्रेरी में एक समस्या आ गई। दूसरे मोहल्ले के कुछ गुंडे अंदर घुस आए और उन्होंने झगड़ना शुरू कर दिया। माइक के डैडी ने सुझाव दिया कि हम अपना यह कारोबार बंद कर दें। तो इस तरह हमारा कॉमिक्स का धंधा बंद हो गया और हमने कन्वीनियेंस स्टोर पर हर शनिवार काम करना भी बंद कर दिया। फिर भी, अमीर डैडी रोमांचित थे क्योंकि उनके पास ऐसी बहुत सी नई बातें थीं, जो वे हमें सिखाना चाहते थे। वे ख़ुश थे क्योंकि हमने उनके पहले सबक़ को इतनी अच्छी तरह सीख लिया था। हमने यह भी सीख लिया था कि पैसे से अपने लिए काम कैसे करवाया जाता है। स्टोर में नौकरी के बदले में पैसा नहीं मिलता था, इसलिए हमें मजबूरन अपनी कल्पनाशक्ति पर ज़ोर डालना पड़ा ताकि हम पैसा कमाने का कोई दूसरा तरीक़ा ढूँढ़ सकें। कॉमिक्स लायब्रेरी हमारा अपना व्यवसाय था, हमारा धन हमारे क़ाबू में था और हम किसी मालिक के मोहताज नहीं थे। इसमें सबसे अच्छी बात यह थी कि हमारे व्यवसाय से हमें तब भी पैसा मिलता था, जब हम वहाँ स्वयं मौजूद नहीं होते थे। उस समय, हम पैसे के लिए काम नहीं करते थे, बल्कि हमारा पैसा हमारे लिए काम करता था।

ज़्यादा तनख़्वाह देने के बजाय अमीर डैडी ने हमें इतनी बढ़िया नसीहत दे दी थी।

Scanned by CamScanner